

संजय की कलम से ..

रक्षा बन्धन है पवित्रता का बन्धन

शताब्दियों से हर वर्ष बहनें अपने-अपने भाइयों को बड़े स्नेह से रक्षा-बन्धन बाँधती आई हैं। परंतु, विचार करने की बात है कि उस बन्धन को निभाने में भाई कहाँ तक सफल हुए हैं और बहनें भी बाँधते समय कहाँ तक उस ऊँचे भाव को लिये होती हैं? अनुभव के आधार पर सभी कहेंगे कि आज यह त्योहार थोड़ी-बहुत खुशी मनाने का अवसर मात्र और एक रस्म पूरी करने का दिन होकर ही रह गया है, वरना न तो इसे कोई बन्धन मानकर निभाता है और न ही इसमें रक्षा की कोई बात ही गंभीरतापूर्वक सोची गई होती है।

केवल बहनों को नहीं, भाइयों को भी रक्षा की आवश्यकता

हम देखते हैं कि रक्षा-बन्धन के दिन बहुत छोटी आयु वाली बहनें भी अपने छोटे-छोटे भाइयों को राखी बाँधती हैं। सोचिये तो भला इतनी छोटी आयु वाले बच्चों के मन में रक्षा का क्या संकल्प हो सकता है? बड़ी आयु वाले भाई भी बहनों की कहाँ रक्षा कर सकते हैं? फिर रक्षा केवल बहनों को थोड़े ही चाहिये, भाइयों को भी तो रक्षा की आवश्यकता होती है। पुनश्च, आज बहन यहाँ रहती है तो भाई हजारों मील दूर रहता है, वह तो समय पर पहुँच भी नहीं पाता है। पिछले दिनों समाचार-पत्रों में समाचार

था कि मुंबई में एक नौकर ने अपने स्वामी की अनुपस्थिति में अपनी स्वामिनी की पवित्रता को नष्ट करने का प्रयत्न किया, अन्य कोई सहारा न पाकर उस महिला ने ऊपर से छलांग लगाकर आत्महत्या कर ली। ऐसे अवसर पर भाई कहाँ से पहुँच सकता था? इसी प्रकार, अन्य प्रकार के शत्रुओं से भी हर समय कौन किसी की रक्षा कर सकता है? अतः प्रश्न उठता है कि वास्तविक रक्षा बन्धन कौन-सा है?

यह बन्धन है धर्म का

जहाँ तक रोग, निर्धनता तथा अन्य प्रकार की आपदाओं और विपदाओं का प्रश्न है, वे भी मनुष्य के अपने ही कर्मों के फल के रूप में सामने आती हैं। जब तक मनुष्य अपने कर्मों को नहीं सुधारे, अपने स्वभाव को मधुर और दिव्य न बनाये तब तक तो रक्षा का कोई उपाय नहीं है। अतः स्पष्ट है कि रक्षा बन्धन कोई स्थूल चीज़ नहीं है बल्कि यह धर्म का बन्धन अथवा पवित्रता का बन्धन है। जो धर्म की रक्षा करते हैं, धर्म उनकी रक्षा करता है। जो मनसा, वाचा, कर्मणा पवित्र रहते हैं, उनकी रक्षा उनके अच्छे कर्म करते हैं। कोई न कोई व्यक्ति उनकी सहायता के लिए निमित्त बन ही जाता है। अतः अब हमको वास्तव में यह पवित्रता का नया

अमृत-श्रुची

- ◇ आधि और व्याधि (सम्पादकीय) 6
- ◇ सहज धारणा ब्रह्मचर्य की 8
- ◇ पत्र संपादक के नाम 9
- ◇ प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी ... 10
- ◇ दैवी संविधान द्वारा 12
- ◇ क्या वो दिन फिर लौट..... 15
- ◇ दीर्घकाल का अभ्यास 18
- ◇ नई ज़िन्दगी मिली..... 19
- ◇ बीती को भुलाइये 20
- ◇ मूल्यों के प्रसार का माध्यम... 22
- ◇ जब बाबा मेरा बेटा 23
- ◇ ब्रह्मा बाप समान 24
- ◇ तहेदिल से शुक्रिया..... 25
- ◇ जिस्मानी सेना के निमित्त 26
- ◇ मधुमेह का सम्पूर्ण निदान..... 28
- ◇ दादी प्रकाशमणि (कविता) ... 29
- ◇ सचित्र सेवा समाचार..... 30
- ◇ दादी जी - मेरी दृष्टि में..... 32
- ◇ एक खत बाबा के नाम 33
- ◇ आखिर कब तक सहन करें... 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383
hindigyanamrit@gmail.com

और विचित्र बन्धन बाँधना चाहिए।

बहनें भाइयों को बन्धन क्यों बाँधती हैं?

बहनों का भाइयों से बहुत स्नेह होता है। वे अपने भाइयों का चारित्रिक पतन नहीं देख सकतीं और उन्हें विकारों के बन्धन में बँधा हुआ देखना भी स्वीकार नहीं कर सकतीं क्योंकि विवेकवान और ज्ञानयुक्त बहनें जानती हैं कि विकारों में बँधा हुआ व्यक्ति आखिर दुख के बन्धन में, यम के बन्धन में और काल के बन्धन में बँधता है। इसलिए वे उसे पवित्रता का एवं धर्म का बन्धन बाँधती हैं। अतः शारीरिक नाते से इस बन्धन को बाँधकर उत्सव को पूरा हुआ मानना, इस महान उत्सव के रहस्य को न जानना है। इसका रहस्य जानना बन्धन बाँधने और बँधवाने वाले दोनों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

पवित्रता के व्रत की रक्षा करो

इस त्योहार को 'विष तोड़क पर्व' अथवा 'पुण्य प्रदायक पर्व' कहा गया है, उससे भी सिद्ध है कि यह कोई बहुत ऊँचा बन्धन है, डोरों का बन्धन तो केवल सूचक है। सभी जानते हैं कि कमल फूल पवित्रता का सूचक है अथवा एक अलंकार मात्र है। जब हम किसी को यह कहते हैं कि 'कमल फूल धारण करो' तो उसका भावार्थ यह नहीं होता कि किसी जलाशय से कमल फूल तोड़कर उसे

हाथ में पकड़ो बल्कि उसका भाव यह है कि जैसे कमल जल में रहते हुए उससे अलिप्त और न्यारा रहता है, वैसे ही आप भी न्यारे और अनासक्त बनो। इसी प्रकार 'रक्षा बन्धन बाँधो' का भावार्थ यही है कि 'पवित्रता के व्रत की रक्षा करो।'

पवित्रता प्रिय है

रक्षाकारी प्रभु को

बहन-भाई का नाता बहुत पवित्र नाता है। बहन-भाई की दृष्टि एक-दूसरे के प्रति पवित्र होती है, उसमें काम-वासना का तो लेशमात्र भी कदापि नहीं होता। अतः धर्म के नाते से बहनें, भाइयों को अथवा ब्राह्मण यजमानों को यह बन्धन बाँधते हैं कि 'भइया, पवित्र रहना क्योंकि पवित्रता ही रक्षाकारी प्रभु को प्रिय है।'

श्रेष्ठ आचरण से बनता है

उपदेश प्रभावशाली

वास्तव में जो बहनें स्वयं ब्रह्मचर्य व्रत को धारण नहीं किये होतीं अथवा जो ब्राह्मण स्वयं इस महाव्रत का पालन नहीं करते, वे इस बंधन को किसी भी व्यक्ति को बांधने के अधिकारी भी नहीं हैं। जो व्यक्ति स्वयं किसी नियम का पालन नहीं करता, उसे न तो दूसरों को उस नियम के बारे में उपदेश देने का अधिकार है, न ही उपदेश से किसी पर प्रभाव ही पड़ता है। इस विषय में महात्मा गांधी के जीवन से एक दृष्टान्त का यहाँ उल्लेख करने से

बात अधिक स्पष्ट हो सकेगी। कहते हैं कि एक बार एक माता अपने एक पुत्र को गांधी जी की प्रार्थना-सभा के बाद उनके पास ले गईं और बोली – 'महात्मा जी, यह मेरा बच्चा गुड़ अधिक खाता है। इसे फोड़े-फुन्सी भी बहुत होते हैं तो भी यह गुड़ खाने की लत को छोड़ता नहीं है, आप इसे समझायेंगे तो यह मान जायेगा।' गांधी जी ने कहा – 'अच्छी बात है, आप इसे एक मास के बाद मेरे पास ले आना तो मैं इसे समझाऊँगा।' माता उस दिन तो चली गईं। एक मास के बाद फिर आईं और उसने महात्मा गांधी को पिछली बात याद दिलाई। गांधी जी ने बच्चे को समझाया और वह उनकी बात मान गया। इस पर उस माता ने पूछ ही लिया – 'आपने यही बात एक महीना पहले ही कह दी होती तो कितना अच्छा होता?' गांधी जी बोले – 'परन्तु तब मैं यह बात कहने का अधिकारी नहीं था, तो कैसे कहता?' माता ने कहा – 'तो एक मास में कैसे अन्तर पड़ गया?' गांधी जी ने कहा – 'अन्तर क्यों नहीं पड़ा? मैंने स्वयं ही जब गुड़ खाना छोड़ दिया, तभी तो मेरी बात का इस बच्चे पर प्रभाव पड़ा।'

पर्व का प्रारंभ

तो हम यह कह रहे थे कि स्वयं ब्रह्मचर्य व्रत को ज्ञान सहित पालन करने वाली बहनें अथवा मनसा,

वाचा, कर्मणा पवित्र रहने वाले ब्राह्मण जब रक्षाबन्धन अपने भाइयों को अथवा यजमानों को बाँधें तभी उन्हें भी प्रेरणा मिलेगी। आदिकाल में अर्थात् सतयुग का आरंभ होने से थोड़ा पूर्व, संगमयुग में जब प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ज्ञान-योग की शिक्षा प्राप्त करने वाले ब्राह्मणों ने अथवा कन्याओं व माताओं ने ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया तब उन्होंने दूसरों को भी इस व्रत में बाँधा और उन्हें ईश्वरीय सम्मति दी कि वे इस व्रत की रक्षा करें। इस प्रकार से इस रक्षाबन्धन अथवा विषतोडक पर्व की शुरूआत हुई।

श्रावण मास की महिमा

आप जानते हैं कि यह त्योहार श्रावण मास में मनाया जाता है। इस मास को 'मल मास' भी कहा जाता है। इन दिनों लोग पुरुषोत्तम मास भी मनाते हैं और सत्संग आदि भी बहुत करते हैं। तो यह प्रथा भी इसी रहस्य की ओर संकेत करती है कि जब सारी सृष्टि काम-क्रोधादि विकारों से मलीन हो गई थी अर्थात् जब कलियुग का अंतिम चरण था, तब परमपिता परमात्मा, पुरुषोत्तम प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हुए और उन्होंने ज्ञान-वर्षा की, उन द्वारा ज्ञान सुनने वाले सच्चे एवं पवित्र ब्राह्मणों ने स्थान-स्थान पर सत्संग किये। तब उन्होंने लोगों को पवित्रता की रक्षा का बन्धन बाँधा।

सच्चे महावीर, महावीरनी

अतः यदि 'काल' से, यमराज के दण्डों से, रोग और शोक से हम सचमुच रक्षा चाहते हैं तो हमें चाहिए कि आज हम पुनः यह विचित्र बन्धन बाँधें अर्थात् हम मनसा, वाचा, कर्मणा को पूर्ण पवित्र बनाने का व्रत लें। दूसरों को रक्षाबन्धन बाँधने अथवा उनसे बँधवाने की बजाय पहले तो हम स्वयं को इस बन्धन में बाँधें। बाज़ार से एक रेशमी डोर जैसी राखी खरीदकर उसे बाँध देने अथवा बँधवा लेने और कुछ पैसे तथा मिठाई दे-लेकर फिर निर्बन्धन हो जाना यह तो अपने जीवन के प्रति अचेत लोगों का काम है। यदि जीवन को कुछ उच्च बनाने की लगन है, यदि प्रभु से सच्चा प्यार है तो पवित्रता का बीड़ा उठाना चाहिए। रक्षाबन्धन बँधवाना महावीरों का काम है। कायर भला किसी की क्या रक्षा करेंगे? महावीर तथा महावीरनी वे हैं जो काम विकार से युद्ध ठान लें, जो क्रोध की ज्वाला को बुझाकर शान्त करने के लिए रूहानी फायर ब्रिगेड में भरती हों, जो मोह की खाई को लांघने का दाँव लगाएँ और अहंकार को ज्ञान की टंकार से मिटा दें। अतः बाँधना है तो ऐसा रक्षाबन्धन बाँधो कि जिससे स्वर्ग का स्वराज्य मिल जाये, जिससे प्रभु का प्यार प्राप्त हो, जिससे फिर कभी रक्षा की आवश्यकता ही न रहे और जिससे

सभी कामनायें पूर्ण हो जायें।

नये जीवन का व्रत लें

पहले यदि किसी के साथ अपवित्रता युक्त नाता अथवा व्यवहार रहा है तो वे इस पावन दिन पर एक-दूसरे को पवित्रता का बन्धन बाँधें। रक्षाबन्धन के दिन वे यह व्रत धारण करें कि आज से हम पवित्रता के बन्धन में बँध गये हैं, अब हमारा जीवन एक नया जीवन होगा, इसमें हम अपने मन, वचन और कर्म की पवित्रता की पूरी रक्षा करेंगे। हम अपने लेन-देन पर तथा अपने कर्मखाते पर भी ध्यान रखेंगे ताकि उसमें किसी भी प्रकार की अपवित्रता न आये। इस प्रकार के रक्षाबन्धन से ही यह देश फिर श्रेष्ठाचारी अथवा स्वर्ग बन सकता है और यहाँ बापू गांधी के राम राज्य की शुभेच्छा पूर्ण हो सकती है। इसलिए कहावत भी है कि इन्द्र को इन्द्राणी ने जब यह रक्षाबन्धन बाँधा था तो उसे स्वर्ग का दैवी स्वराज्य मिला था अथवा कि यमुना ने अपने भाई यम को जब यह बन्धन बाँधा था तो उसने यह वरदान दिया था कि इस दिन जो बहन-भाई रक्षाबन्धन बाँधेंगे वे यमलोक के दण्डों से बच जायेंगे। स्पष्ट है कि ऐसा रक्षाबन्धन जिससे कि स्वर्ग का स्वराज्य प्राप्त हो अथवा मनुष्य यम के दण्डों से बच जाये, पवित्रता ही का बन्धन हो सकता है, अन्य कोई बन्धन नहीं। ❖

आधि और व्याधि

आज के संसार में शारीरिक व्याधियाँ दिन प्रतिदिन नए-नए रूप लेकर बढ़ती जा रही हैं। समाज का हर वर्ग इससे चिन्तित है और इन व्याधियों के शमन के लिए चिकित्सकों, अस्पतालों तथा औषधियों पर होने वाली शोध भी खूब बढ़ोतरी पर है। परन्तु गहराई से विचार करने पर एक तथ्य हमारे सामने यह आता है कि व्याधि से भी मानव की बड़ी शत्रु है आधि अर्थात् मानसिक व्याधि। यह जितना अधिक नुकसान पहुँचाती है उतना व्याधि नहीं। मान लीजिए, एक व्यक्ति बुखार से पीड़ित है। वह शारीरिक दर्द या कमजोरी को भोगते हुए चुपचाप चारपाई पर पड़ा रहता है। उसकी सेवा में लगे परिवार के लोगों को थोड़ा धन खर्च करना पड़ता है, सेवा में समय लगाना पड़ता है पर कुछ समय बाद ज्वर उतर जाता है और व्यक्ति पहली अवस्था में आ जाता है।

आधि का प्रभाव

करोड़ों पर

ज्वर एक साधारण बीमारी है, इससे बड़ी-बड़ी जानलेवा बीमारियाँ जैसे कैन्सर, हृदयरोग आदि भी होती हैं और कई बार लाखों का खर्च करवाके रोगी दम भी तोड़ देता है परन्तु फिर भी इस सारे प्रकरण में

रोगी, उसके परिवार वाले और जान-पहचान वाले मुट्ठी भर लोग ही कष्ट का अनुभव करते हैं। परन्तु, किसी भी मानसिक रोग अर्थात् आधि का प्रभाव मुट्ठी भर लोगों तक सीमित नहीं रह पाता, इससे ग्रसित व्यक्ति समाज और देश के करोड़ों लोगों में भय, असुरक्षा, दुख, नफरत, चिन्ता जैसी भावनाओं का विस्फोट कर उनका चैन से जीना दुभर कर देता है।

महाभयंकर है

काम-पिशाच

काम रूपी आधि से पीड़ित व्यक्ति को ही लीजिए। ऐसे व्यक्ति पर हर समय काम का भूत सवार रहता है। वह अपने इस काम-कुठाराघात के लिए कभी भी, कहीं भी, कुछ भी करने को तत्पर रहता है। काम विकार के चिन्तन में उसके बाकी सभी चिन्तन समाप्त हो जाते हैं। काम उसे ऐसा अन्धा बना देता है कि वह समय, स्थान, आयु, रिश्ता, मान-मर्यादा सबकी तरफ से आंखें मूंद लेता है। वह रात-दिन हाय काम, हाय काम की धुन पर मन को उधम मचाने के लिए खुला छोड़ देता है। कहावत है, काम सोए आ घर में, पांव पसारे वा घर में, कामी व्यक्ति का मन भी इच्छित, अनिच्छित पात्रों तक मन के पांव पसारे रहता है। जैसे भूखे भेड़िए को कोई

कहीं मिल जाए, उसे धर दबोचता है, काम रूपी आधि से पीड़ित को भी कोई मिल जाए तो वह धर दबोचने की कोशिश करता है। नर-पिशाच तो केवल शरीर को नुकसान पहुँचाते हैं पर यह काम-पिशाच तो आत्मा की मान-मर्यादा भी तार-तार कर देता है। सर्प, बिच्छू में ज़हर होता है पर वे बिना छेड़े अकारण किसी को दंश नहीं चुभोते पर यह काम रूपी ज़हर को धारण करने वाला नर-सर्प तो निर्दोष, भोली, मासूम बच्चियों, कन्याओं, माताओं को काट खाता है।

काम-पीड़ितों का

इलाज क्या?

ऐसे कृत्य का आधार किसी एक घर तक सीमित नहीं रहता, सारी मानवता पर कहर बनकर टूट पड़ता है। लोगों का मानवता और व्यवस्था पर से विश्वास उठने लगता है। निर्दोष मानवों पर कड़े पहरे लग जाते हैं। सोचने की बात यह है कि हमने ज्वर पीड़ितों के इलाज के लिए, कैन्सर पीड़ितों के इलाज के लिए, अन्य व्याधियों से पीड़ितों के इलाज के लिए बड़े-बड़े अस्पताल बनवाए परन्तु काम-पीड़ितों के इलाज के लिए क्या किया? कौन-सा दवाखाना खोला, कौन-सी औषधि खोजी, जो ऐसे काम-पिशाचों को नर बना दे।



शक्तिशाली औषधि है 'मनमनाभव'

अनुभव यही कहता है कि जितनी भी मन की बीमारियाँ हैं चाहे काम हो, क्रोध हो, लोभ हो, मोह हो, अहंकार हो, ईर्ष्या हो, नफरत हो, बदले की भावना हो, इन सब का इलाज किसी स्थूल औषधि से नहीं हो सकता। इन मानसिक व्याधियों के लिए चाहिए मन का इलाज। मन का इलाज वही कर सकता है जिसका अपना मन किसी काल में, किसी स्थिति में ना भटकता हो, जो सदा मन का मालिक हो, मन की शक्ति का भण्डार हो। ऐसा तो एक पिता परमात्मा ही है जो सबके भटकते मनो को ठिकाना देने वाला है। वह काम-पीड़ितों को मनमनाभव की शक्तिशाली औषधि देता है जिससे वे इस ज़हर से मुक्त हो समाज के सभ्य, शालीन, दिव्य आचरण वालों की पंक्ति में खड़े हो सकते हैं। नारे लगाना, शोर मचाना, कानूनों के जखीरे खड़े करना, किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाना, इस समस्या का समाधान नहीं है। इसके लिए आवश्यक है इस प्रकार का वातावरण बनाने में सहयोग देना ताकि लोग ईश्वर-उन्मुख हो सकें। उस सर्वोच्च काम-अरि की मीठी, प्रेमभरी स्मृति से अपने भीतर छिपे इस पिशाच का समूल नाश कर सकें।

ज्ञानमृत

शरीर है

हाड़-मांस का खिलौना

किसी भी प्रकार की आधि अर्थात् मानसिक विकृति के उत्पन्न होने का मूल कारण है स्वयं के स्वरूप की विस्मृति। जब मानव स्वयं के आत्म स्वरूप को भूल देह के भान में रहने लगता है तो उसमें काम, क्रोध आदि विकारों का ज्वार उठने लगता है। इसके शमन के लिए बार-बार स्व-स्वरूप की स्मृति आवश्यक है। छोटे बच्चों के खेलने के लिए हम अक्सर कपड़े के घोड़े, गुड़िया, हाथी आदि बनाते हैं। इन्हें बनाने के लिए पहले लकड़ी का ढांचा लेते हैं, ऊपर से रूई लपेटते हैं और फिर रूई के चारों ओर कपड़ा चढ़ा देते हैं, इसके बाद चमकदार चीजों से उसका श्रृंगार कर देते हैं। इस शरीर की बनावट भी इसी प्रकार की है। हड्डी के ऊपर मांस चढ़ा है, उसमें से रक्त की पतली-पतली शिराएँ बह रही हैं और ऊपर से त्वचा का आवरण चढ़ा दिया गया है। अन्तर सिर्फ इतना है कि खिलौना चलता-हिलता नहीं है पर मानव शरीर हर क्रिया करता है क्योंकि इसमें दिव्य करंट आत्मा है। कई खिलौने भी बटन दबाने से चल पड़ते हैं क्योंकि उनमें बिजली का छोटा करंट डाला जाता है। मनुष्य खिलौना तो बना सकता है पर उसमें आत्मा नहीं डाल सकता, आत्मा न बनाई जा सकती है,

न मिटाई जा सकती है, यह अमर, अजर, अविनाशी, शाश्वत और सनातन है।

हर जड़ वस्तु चेतन के उपभोग के लिए होती है। शरीर भी जड़ है और आत्मा चेतन है। आत्मा शरीर को साधन के रूप में प्रयोग करती है। जैसे एक पेन्टर तुलिका का प्रयोग करता है, एक लेखक कलम का प्रयोग करता है, एक गायक वाद्ययन्त्र का प्रयोग करता है, उसी प्रकार, आत्मा भी इस शरीर रूपी यन्त्र का प्रयोग करती है अपने अन्दर के गुण और शक्तियों को प्रकट करने के लिए।

राजयोग अर्थात्

इन्द्रियों से न्यारा होना

आत्मा इन्द्रियों के माध्यम से बाहरी जगत को देखती, सुनती, स्पर्श आदि करती है। वह जितनी ज्यादा इन्द्रियों से जुड़ी रहती है, उतने ज्यादा बाहरी जगत के दृश्य, बातें, ध्वनियाँ अन्दर प्रवेश करते रहते हैं और आत्मा पर प्रभाव डालते हैं। आज के तमोगुणी संसार में इन्द्रियों से अन्दर जाने वाले अधिकतर विषय भी तमोगुणी होते हैं और आत्मा पर तमोगुणी प्रभाव डालकर उसे तमोगुणी कर्म करने के लिए उत्तेजित करते रहते हैं। इससे बचने का उपाय राजयोग है। राजयोग के अभ्यास द्वारा आत्मा, इन्द्रियों का जरूरत के समय प्रयोग करके फिर उनसे न्यारी

(डिटैच) हो जाती है। जितनी न्यारी रहती है उतनी बाहरी प्रभावों से बची रहती है और सशक्त रहती है। मानसिक विकृतियों, व्यथाओं, व्याधियों से बचने का सर्वोत्तम उपाय राजयोग ही है। इसे कोई भी व्यक्ति कहीं भी, कभी भी, कितने भी समय तक अभ्यास में ला सकता है। इससे आत्मबल और परमात्मबल दोनों की प्राप्ति एक साथ हो जाती है। इन्द्रियों से डिटैच होने के बाद आत्मा सरलता से परमपिता परमात्मा की प्रेमभरी याद का आस्वादन कर सकती है और इन्द्रियजीत सो जगतजीत बन जाती है। बाहुबल से जगत को जीतने का सपना एक धोखा ही है। बाहुबल से जीता गया पुनः छीन लिया जाता है परन्तु राजयोग बल से मन सहित इन्द्रियों और प्रकृति को जीतकर सच्चे अर्थों में जगतजीत अर्थात् आने वाली सतयुगी दुनिया का मालिक बना जा सकता है।

— ब्र.कु. आत्म प्रकाश

वैश्विक प्रेम के प्रतीक
'रक्षाबंधन पर्व'
तथा
सतयुगी दुनिया के
महाराजकुमार श्रीकृष्ण
के जन्मोत्सव
'जन्माष्टमी' पर्व की
पाठकगण को कोटि-
कोटि बधाइयाँ

सहज धारणा ब्रह्मचर्य की

गायत्री बहन, हरदा (म.प्र.)

मैं पिछले 17 वर्षों से नियमित रूप से ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग का अभ्यास कर रही हूँ। कुछ वर्ष पहले मैंने रामकृष्ण परमहंस रचित एक पुस्तक पढ़ी जिसमें उन्होंने वर्णन किया था कि मैंने अपनी पत्नी में देवी का साक्षात्कार किया था। वे दोनों ही जीवन भर मन, वचन, कर्म एवं शरीर से पवित्र रहे। उस पुस्तक को पढ़कर मुझे पता चला कि पति-पत्नी के संबंध में भी ब्रह्मचर्य संभव है। उसी दिन से मेरे मन में सिर्फ एक ही बात चलने लगी कि मुझे भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना है। मैंने अमृतवेले के मेडिटेशन में भगवान के सामने अपने मन की तीव्र इच्छा को पूरा करने के लिये प्रार्थना की।

उस समय तक हमारी कोई संतान नहीं थी। मेरे पति ने भगवान के सामने वचन लिया कि यदि मुझे एक संतान होती है तो मैं आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा। कुछ ही दिनों में उन्हें पता चला कि वे पिता बनने वाले हैं। उस दिन से आज तक वे ब्रह्मचर्य का पालन कर रहे हैं। हम अपना जीवन बहुत सुख-शान्ति के साथ बिता रहे हैं। इस के पालन से जीवन में आने वाली हर परिस्थिति एवं कठिनाई स्वतः दूर होने लगी, भगवान से अनेक शक्तियाँ भी प्राप्त होने लगीं। दृढ़ इच्छा शक्ति, सहन शक्ति, सामना करने की शक्ति एवं निर्णय करने की शक्ति स्वाभाविक अनुभव होने लगी। मैं अपने अनुभव के आधार पर यह कह सकती हूँ कि जो लोग यह सोचते हैं कि गृहस्थ व्यवहार में ब्रह्मचर्य का पालन कैसे हो सकता है, यह सोच गलत है। गृहस्थ व्यवहार में यह धारणा हो सकती है, बात है सिर्फ अपनी लगन की।

लौकिक पति का अनुभव उन्हीं के शब्दों में

दिसंबर, 1998 से ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए मैंने विशेष आंतरिक बल व शक्ति का अनुभव किया। मेरे क्रोध, अहंकार कब समाप्त हो गये मुझे पता ही नहीं चला। हम दोनों एक-दूसरे को मास्टर गॉड समझते हैं। मैंने हर परिस्थिति में खुश रहना सीख लिया है। जो भी व्यक्ति ब्रह्मचर्य धारण करना चाहता है उसे सबसे पहले भगवान में दृढ़ निश्चय एवं स्वयं में दृढ़ इच्छा शक्ति होना आवश्यक है कि मुझे इसका पालन करना ही है, फिर सब बिल्कुल सहज है। ❖



‘पत्र’ संपादक के नाम

मार्च, 2013 अंक में, ‘विदेश में ईश्वरीय सेवा का प्रारम्भ-4’ लेख के द्वारा ‘बाबा’ के चमत्कार के साक्षात दर्शन हुए हैं। ऐसा लगता है कि बाबा ने सेवा को पूरा कराने के लिए सारी परिस्थितियाँ खुद ही निर्मित कीं। ‘ज्ञानामृत’ पत्रिका का पूरा कलेवर ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणास्पद है।

— राधाकिसन खेतान, ग्वालियर

ज्ञानामृत के लेख ज्ञानवर्धक होते हैं। पढ़कर मन हलका व शान्त हो जाता है। अप्रैल के अंक में सम्पादकीय बहुत प्रभावशाली रहा। लेखक ने बताया कि मन को कैसे स्थिर करें। राजयोग द्वारा पुराने संस्कारों को कैसे समाप्त करें और राजयोग को विश्वकल्याण के लिए कैसे प्रयोग करें। लेख ‘सत्कर्मों से दूर करता है आलस्य’ बहुत अच्छा लगा। वास्तव में आलस्य भी एक विकार है जो हमारे पुरुषार्थ में रुकावट डालता है। लेख पढ़कर आलस्य को दूर करने में काफी सहायता मिलेगी। नवम्बर, 2012 के अंक में ‘समय की पहचान’ बहुत प्रशंसनीय था तथा मन को छू गया। पता चला कि संगमयुग में समय का सदुपयोग कैसे करें। समय तो निरन्तर चलता रहेगा। हमें ही पुरुषार्थ तथा अच्छे काम करके उसके साथ चलना

है। दिसंबर, 2012 अंक में ‘मन जीते जगतजीते’ मन की भटकन तथा व्यर्थ विचारों से मुक्ति पाने में बहुत सहायक हो रहा है। जैसे तो मन को भटकन से बचाना बहुत ही कठिन है परन्तु जिस सरल ढंग से लेख में समझाया गया है, बहुत सराहनीय है। इससे बहन-भाइयों को मन को एकाग्र करने में तथा परमात्मा से योग लगाने में काफी सहायता मिलेगी

— एम.एल.अरोडा,
करनाल (हरियाणा)

जून, 2013 के अंक में प्रकाशित लेख “चक्रव्यूह से सावधान” वास्तव में आँखें खोलने वाला है। यह बात 100 प्रतिशत सही है कि टी.वी. के सामने बैठते हैं सिर्फ समाचार देखने के उद्देश्य से लेकिन कब माया चुपके से हाथ से रिमोट छीन लेती है और हम दुनिया के रंग-बिरंगे, वाहियात, बेतुके धारावाहिक देख-देखकर संगमयुग की अनमोल घड़ियों को नष्ट कर देते हैं। आशा है कि हम सब इस अत्यन्त बहुमूल्य लेख से प्रेरणा लेते हुये अपने में सुधार लायेंगे। मैंने पिछले 16 साल से आज तक टी.वी. पर समाचार, मैच, सीरियल, चलचित्र आदि बिल्कुल भी नहीं देखे हैं।

— ब्र.कु.संजीव कपूर, लखनऊ

ज्ञानामृत पत्रिका ने अनेकों के जीवन को बदला है। मई, 2013 अंक में प्रकाशित “सशक्त कलम” से जीने की नई कला मिली। रमेश भाई के लेख दिल को छू जाते हैं। आज मेरी जो शुभ सोच बनी है उसका आभार ज्ञानामृत पत्रिका को देना चाहूँगा।

— ब्र.कु.मोहित,
हिण्डौन सिटी (राजस्थान)

अप्रैल, 2013 अंक में कई प्रभावशाली लेख पढ़ने को मिले जैसे कि ‘विदेश में ईश्वरीय सेवा का प्रारम्भ’, ‘सच्ची मर्दानगी’, ‘सत्कर्मों से दूर करता है आलस्य’, ‘ज्ञान मिला, व्यसन छूटे’ आदि-आदि। ‘जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि’ लेख मानवीय दृष्टिकोण को उजागर करता है, सुन्दर सोच को दर्शा रहा है। इससे रचनात्मकता को सम्बल मिलता है। यह लेख सुसृष्टि के निर्माण में योगदान अवश्य देगा।

— अतर सिंह, सूरजपुर,
अलीगढ़ (उ.प्र.)

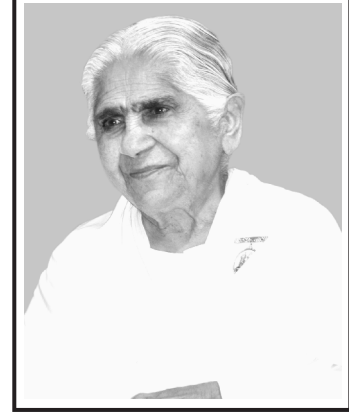
ज्ञानामृत पत्रिका के हर पेज के नीचे जो लाइनें लिखी होती हैं केवल उन्हें याद करके अपने मन में उतार लें तो सारा जीवन ही सुख में बदल सकता है। जो इन लाइनों को बनाते एवं छापते हैं उन्हें धन्यवाद।

— विशाल “देशभक्त” सराय
हकीम, अलीगढ़ (उ.प्र.)

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ...

— सम्पादक



प्रश्न:- निराकारी स्थिति में रहना है तो क्या करें?

उत्तर:- इसके लिए निरन्तर आत्म-अभिमान की स्थिति में रहने का अभ्यास चाहिए। अन्दर देह-अभिमान का अंश भी न रहे, यह चेक करके अपने आपको साफ-शुद्ध बनाना है, तब निराकारी स्थिति से निरहंकारी स्वतः बन जाते हैं। निराकारी स्थिति से आत्मा को इतनी शक्ति मिलती है, जो आत्मा शुद्ध-शान्त हो जाती है। यह निराकारी आकर्षण उसको न्यारा और प्रभु का प्यारा बना देता है।

साकार बाबा ने अव्यक्त होने के पहले हम बच्चों को यही मन्त्र सुनाया कि निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्थिति में रहना है। निंदा हमारी जो करे, मित्र हमारा सो। जो निंदा करने वाला है वह यह नहीं समझता है कि मैं कोई इसका शत्रु हूँ। वह समझता है, मेरा काम है सबको सावधान करना। तो हम भी अन्दर से यही समझें कि वह मेरा मित्र है, जो मेरा ध्यान खिंचवाया। अपमान की

फीलिंग न आये, सदा अपने स्वमान में रहें। निराकारी स्थिति में रहने के लिए निरहंकारी और निर्विकारी बनना है, सूक्ष्म में भी कोई विकार न हो। विकारों को लाने वाला है अभिमान। काम महाशत्रु तो है लेकिन साक्षी होकर देखो तो अहंकार पहले है। टोटल इन पांचों की आपस में बड़ी एकता है। सभी विकार इकट्ठे हैं। थोड़ा भी कोई विकार है तो देह-अभिमान उसका साथी बन हमको अपनी ओर खींचता है। पुरानी दुनिया पाप की दुनिया है। जैसे बाप दुःख हर्ता सुख दाता है... शान्ति का सागर, प्रेम का सागर है, अपना बच्चा बनाकर सुखी बना देता है, ऐसे बन जाओ। बाबा हमें मीठे-मीठे बच्चे कहकर यादप्यार देता है, कभी खट्टे-मीठे बच्चे कहकर यादप्यार नहीं देता। तो हम भी इतने मीठे बन जाएं।

प्रश्न:- बाबा किसका नाम बाला करता है?

उत्तर:- हम सदा सन्तुष्ट रहें, सब मेरे से सन्तुष्ट रहें, यह बहुत बड़ी बात

बाबा ने ध्यान पर खिंचवाई है। हम जितने बड़े परिवार के बीच में हैं उतना अपने पास एक-दो के प्रति मित्रता भाव तथा शुभ भावना, शुभ कामना ऐसी हो जो कोई भी बात न मुझे डिस्टर्ब करे, न मैं किसको डिस्टर्ब करूं। जो कभी डिस्टर्ब नहीं होता है और दूसरों को डिस्टर्ब नहीं करता है, बाबा उसका नाम बाला कर देता है। बाबा की जो आश है, उम्मीदें हैं, वही उन्हें पूरी कर सकता है, जिसके दिल में और कोई बात नहीं है। बाबा ने ध्यान खिंचवाया है, निराकारी स्थिति में भी रहो और साथ-साथ ब्रह्मा बाप को भी फालो कर फरिश्ता रूप की स्थिति में रहो। बाबा ने बहुत सहज करके दिया, 24 घण्टे में, 24 बार यह अभ्यास करो।

प्रश्न:- ज्ञान सागर की गहराई में जाने का अनुभव सुनाइये।

उत्तर:- ज्ञान सागर बाबा ने ज्ञान दिया, हमने ज्ञान सागर में डुबकी लगाई और पावन बन गये, फिर रत्नों से खेलने लगे। नदी में नहाना सहज है, सागर में

नहाने के लिए अक्ल भी चाहिए तो ताकत भी चाहिए। बाबा ज्ञान का, प्रेम का, आनंद का, पवित्रता का सागर... है, उसमें डुबकियाँ लगाते चेहरा चमकने लगता है। सागर में नहाने वाले कपड़े उतार देते हैं, यह कपड़ा नहीं, शरीर रूपी कपड़ा उतार अशरीरी बन सागर की गहराई में चले जाओ फिर रत्न लेकर आओ, कौड़ियों में खुश नहीं हो जाना। पहले कौड़ियों की भी कीमत थी। कौड़ियाँ बनावटी नहीं होती हैं। पैसा खोटा हो सकता है, कौड़ी नेचुरल होती है। कौड़ी से अभी हम हीरे जैसा बन रहे हैं। सागर में गहरे जाओ तो रत्न मिलते हैं। रत्नों से कौन खेलेंगे? जिनको भविष्य का नशा है। अभी हम बेगर हैं भविष्य में प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने वाले हैं। एक बेगर होते हैं मांगने वाले, हम वह बेगर नहीं। बेगर माना बेफिकर रहने वाले। जो बेफिकर रहते हैं, वह दाल-रोटी खाते परमात्मा के गुण गाते हैं।

प्रश्न:- बाबा के समीप आने के लिए क्या करें?

उत्तर:- इसके लिए पवित्रता, शान्ति, प्रेम, ज्ञान, आनंद, शक्ति मेरे पास हो। ये सब भगवान ने वर्से में दिए हैं। वर्से में उसको मिलता है जो अच्छा पुरुषार्थ करता है। सुख-शान्ति की सम्पत्ति से सदा सम्पन्न होकर, बाबा के समान बनने की लगन में रहने से

निराकारी और फरिश्ता स्थिति नेचुरल वरदान में मिल जायेगी, मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। जो सच्चे बच्चे हैं उनको वर्सा भी मिला, वरदान भी मिला, सकाश भी मिली, करेन्ट भी मिली।

प्रश्न:- आपको स्टेबल माइन्ड का टाइटल कैसे मिला?

उत्तर:- यह भी कमाल है मेरे बाबा की, सिखाया बाबा ने है पर साइन्स वालों ने बता दिया कि बाबा ने क्या सिखाया है। हर एक देखे कि मैंने लाइफ में औरों को कितना टाइम देखा है! अपने को और बाबा को कितना टाइम देखा है? सच्चा-सच्चा चार्ट हर एक अपना देखे। कई बाबा के बच्चों ने औरों को देखने में बहुत टाइम गंवाया है, खुद को और बाबा को देखने में टाइम नहीं दिया है। यह है गफलत। हमारे जो ईश्वरीय कानून हैं, उनकी लिस्ट हर एक के दिल में, मन में होगी। हमने मन को कभी लूज नहीं छोड़ा है, जो कभी अपनी मत चलावे। ईश्वरीय कानून को बुद्धि में, दिल में बहुत प्यार से सम्भालके रखा है जिस कारण मन, कर्मेन्द्रियों के वश हो नहीं सकता। जो मनमनाभव शब्द है उसके महत्त्व को बचपन से लेकर पक्का समझा है। गीता में भी भगवान थोड़ा ज्ञान सुनाकर गहराई में ले जायेगा, फिर कहेगा, मनमनाभव। ज्ञान धीरे-धीरे स्पष्ट होता रहा है पर बाबा ने

मुरली चलाते बार-बार कहा होगा, मनमनाभव। यही महान मन्त्र है। मन जो मेरा है, वह आर्डर में तो रहे ना! नहीं तो अहंकार अन्दर से खत्म नहीं होता है। साकार बाबा के जो अन्तिम महावाक्य हैं निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी, इनको अच्छी तरह से बार-बार रिवाइज़ करें। अगर रिवाइज़ नहीं किया, रियलाइज़ नहीं किया तो इगोलेस (निरहंकारी) स्थिति आ नहीं सकती। निराकारी स्थिति में रहकर, आकारी सूक्ष्मवतनवासी का अनुभव करते, साकार सृष्टि में सेवा अर्थ पार्ट बजा रहे हैं।

प्रश्न:- अन्तर्मुखता के क्या-क्या फायदे हैं?

उत्तर:- अन्तर्मुखी न होने के कारण बाबा जैसा मुख नहीं बनता, न बनेगा। अन्तर्मुखी माना अन्दर बाबा की स्मृति है। अन्तर्मुखता की गहराई में गई हुई आत्मा समझेगी, बाहरमुखता में नीचे आकर कुछ भी सोचना या बोलना, यह मेरी शान नहीं है। किसी के कारण मैं बाहरमुखता में न आऊँ, मैं अन्तर्मुखी होकर अन्दर ही अन्दर उसको भी बाहरमुखता से फ्री करके अन्तर्मुखी बनाने की भावना रखूँ। शब्दों में न आकर अपने स्वमान में रहूँ और सबके साथ सम्मान से बात करूँ। तो अन्तर्मुखता से प्रैक्टिकल लाइफ में यह चीज़ें साथ देती हैं।



दैवी संविधान द्वारा यज्ञ की सुरक्षा

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

प्यारे शिवबाबा ने एक अव्यक्त मुरली में कहा है कि जो नियम पर चलता है, उसके आगे (नि + यम) यम नहीं आ सकता। नियम पर चलने वालों को सदा ही मर्यादा पालन का बल मिलता है।

नियम हज़ारों प्रकार के होते हैं और उन्हें बनाने वाले भी हज़ारों प्रकार के होते हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में देखा जाये तो हरेक धर्मस्थापक या पंथस्थापक ने अपने-अपने अनुयायियों के मार्गदर्शन के लिए विभिन्न प्रकार के नियम बनाये हैं।

कई बार एक धर्म के नियम दूसरे धर्म के नियमों से विपरीत भी हो सकते हैं जैसे कि भारत में कई संप्रदायों में बालों का मुंडन कराने का नियम है तो कई संप्रदायों में सारी उम्र भाई लोग बाल नहीं कटवाते, ना ही दाढ़ी करते हैं। कई जगह पर उपवास करने की बात होती है तो कई जगहों पर भोजन करने की कोई पाबंदी नहीं होती है।

ये सब नियम तो लौकिक दुनिया में धर्मस्थापकों या पंथस्थापकों ने बनाये हैं, इसी तरह से कानूनी दुनिया में कानून के रक्षकों ने भी अपने-अपने नियम बनाये हैं। इन सबमें ईश्वरीय नियमों का संगमयुग में पालन करना बहुत ज़रूरी है। शिवबाबा ने जब इस

ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की तो पहले-पहले ब्रह्मा बाबा का जीवन समर्पित कराया और मातेश्वरी की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाकर कारोबार किया परंतु ईश्वरीय विश्व विद्यालय के प्रारंभ से लेकर 18 जनवरी, 1969 तक कोई भी नियम संविधान में लिखित में नहीं थे। ब्रह्मा बाबा के द्वारा या संदेशियों के द्वारा जो भी संदेश या निर्देश मिलते थे, उनका हम पालन करते थे और वही हमारे लिए नियम बन जाते थे। दादा विश्व किशोर ने कानून के क्षेत्र के विशेषज्ञों के द्वारा इस विश्व विद्यालय के संविधान (Constitution) का प्रारूप (Draft) बनाकर ब्रह्मा बाबा को दिखाया परंतु कोई भी नियमावली फाइनल नहीं हो सकी। नियमों का संविधान रूप में लिखित में होना ज़रूरी नहीं, यह हकीकत है। इंग्लैण्ड में जहाँ राजतन्त्र अभी भी नाममात्र चल रहा है, वहाँ पर कोई भी संविधान नहीं है और जो भी रीति-रस्म चली आई है और जो भी निर्णय अभी तक न्यायालयों में लिये गये हैं, उन्हीं के आधार पर राज-कारोबार चलता है। वहाँ अभी भी खरीद-बेच के कारोबार के लिए Contract Act नहीं है जैसा भारत में Indian Contract Act या Sales of

Goods Act है। समय प्रति समय वहाँ पर जो भी कानूनी फैसले होते रहे, वे ही कानून बन गये हैं। इंग्लैण्ड के अलावा अमेरिका, रशिया आदि देशों के अपने-अपने संविधान हैं और उनके मुताबिक ही वहाँ का राज्य कारोबार चलता है।

ब्रह्मा बाबा ने मुझे आबू संग्रहालय के पुराने मकान मालिक से बात करके उसे खरीदने के लिए अहमदाबाद भेजा था। अठारह जनवरी दोपहर तक उसका सौदा फाइनल हो गया और पाँच हजार रुपये मैंने उन्हें एडवांस में दे दिये। जनवरी 18 की रात को ही हमारे प्यारे ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हो गये तो मैं पांडव भवन आने के बाद सोच रहा था कि क्या करें, मकान लेना चाहिए या नहीं क्योंकि हमने सौदा तो कर लिया था। मकान मालिक आठ-दस दिन में आने वाला था और रजिस्ट्री के द्वारा वह मकान हमारी संपत्ति बनने वाला था। जब 21 जनवरी को अव्यक्त बापदादा की पधरामणि हुई और अव्यक्त मुरली के पश्चात् मैं उनसे टोली लेने गया तब मैंने बाबा से पूछा कि नक्की लेक के पास स्थित भवन का जो सौदा किया है, वह चालू रखें या क्या करें? अव्यक्त बापदादा ने कहा कि वो तो लेना ही है। इस प्रकार अव्यक्त

बापदादा का उत्तर सुनकर मैं उठ ही रहा था कि बाबा ने कहा, बैठो, अब ईश्वरीय नियमों के अंदर परिवर्तन होगा। मैंने पूछा कि क्या परिवर्तन होगा, वह स्पष्ट कीजिए? तब अव्यक्त बापदादा ने कहा कि अब सारा कारोबार मीटिंग के द्वारा सबकी राय से होगा, आगे चलकर इन नियमों को लिखित रूप देना पड़ेगा।

यह बहुत बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन था क्योंकि तब तक हम ब्रह्मा बाबा से यही सुनते आये थे कि परमात्मा का अपना कारोबार है, अपनी गवर्नेन्ट है और यह ईश्वरीय गवर्नेन्ट दुनिया की किसी भी गवर्नेन्ट के पास रजिस्टर्ड नहीं हो सकती और इसी आधार पर यज्ञ का कारोबार पहले 32 वर्ष तक चला। मैं जब से ज्ञान में आया तब से सोचता था कि क्या किया जाये कि शिवबाबा के नियमों का भी हम पालन करें और लौकिक दुनिया के नियमों का भी अर्थात् दोनों के बीच बैलेन्स हो क्योंकि व्यक्ति अजर-अमर नहीं है परंतु संस्था का अपना संविधान होगा, उसके अपने नियम-मर्यादायें होंगे तो संस्था सदाकाल चलती रहेगी इसलिए मैं ब्रह्मा बाबा को कहता था कि आप एक ट्रस्ट बनाइये जिसके नाम पर अगर हम अचल संपत्ति लेंगे तो वह सदाकाल के लिए संस्था के नाम पर रहेगी परंतु बाबा मकानों को

खरीदने के पक्ष में नहीं थे। एक पांडव भवन ही उस समय तक खरीदा गया था और वह भी दैवी भ्राता विश्व किशोर के नाम पर था और बाद में उन्होंने जीते जी ही इसे चार दादियों के नाम पर ट्रांसफर कर दिया था।

ईश्वरीय नियमों में परिवर्तन होने वाला है, ऐसा संकेत हमें पहले भी नवंबर, 1968 में मिला था जब ब्रह्मा बाबा ने मुंबई में दादी प्रकाशमणि को पत्र लिखा था कि बच्ची, तुम और रमेश आबू में आ जाओ, रमेश ने कई बार मुझे संपत्ति खरीदने के लिए एक संस्था या ट्रस्ट बनाने के लिए कहा है। हम आबू पहुँचे और ब्रह्मा बाबा ने हम दोनों तथा दीदी मनमोहिनी, भ्राता आनन्द किशोर की एक कमेटी बनाई और हम चारों जो भी बात मीटिंग में नक्की करते, उसके बारे में ब्रह्मा बाबा प्रतिदिन रात्रि क्लास में चर्चा करते और अपनी स्वीकृति दे आगे बढ़ाते। इस प्रकार 'वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल ट्रस्ट' नाम से एक ट्रस्ट रजिस्टर्ड कराने की छुट्टी ब्रह्मा बाबा ने दी। अगले दिन मुरली क्लास के बाद मैं जगदीश भाई को यह समाचार लिख रहा था तब ब्रह्मा बाबा ने मुझे बुलाया और कहा कि बच्चे, क्या करते हो? मैंने बताया कि बाबा, मैं यह समाचार जगदीश भाई को लिख रहा हूँ। ब्रह्मा बाबा ने कहा, बच्चे, तेरी लिखत को कौन मानेगा, मैं जगदीश

बच्चे को लिखूँगा तो उस लिखत के आधार पर ये बातें सर्वमान्य हो जायेंगी। ब्रह्मा बाबा ने मेरे आगे ही जगदीश भाई को लंबा-चौड़ा पत्र लिखा और उसमें चार-पाँच दिन की हमारी मीटिंग का पूरा ही निष्कर्ष लिखा। तब मैंने देखा कि ब्रह्मा बाबा की स्मरण शक्ति कितनी श्रेष्ठ है। ब्रह्मा बाबा ने मुझे तथा दादी प्रकाशमणि को फौरन मुंबई जाकर आगे का कारोबार करने को कहा।

बाद में समय प्रति समय गुलजार दादी द्वारा अव्यक्त बापदादा का संदेश मिलता रहा और दिल्ली में अपने विश्व विद्यालय का संविधान बनाने का कारोबार शुरू हुआ। मुंबई से मैं और दादी प्रकाशमणि दिल्ली गए। दीदी मनमोहिनी, भ्राता आनन्द किशोर तथा भ्राता चंद्रहास भी दिल्ली आये। लगातार सात-आठ दिन बैठकर हमने दैवी संविधान का प्रारूप निर्धारित किया। जो चर्चायें हुईं, उन्हें लिखित रूप दिया गया। गुलजार दादी वहीं थे, उनके द्वारा सब बातें फाइनल होती गईं। यह मीटिंग दिल्ली कमलानगर में शुरू हुई तो पहले दिन ही अव्यक्त बापदादा ने संदेश भेजा कि बच्चे, मैं आपके साथ हूँ और साथ ही रहूँगा और प्रेरणा द्वारा यह संविधान बनाने में मदद करता रहूँगा। सचमुच बहुत-सी बातें ऐसी लिखी गईं जो सामान्य संविधान में नहीं होतीं, वह

में जानता था क्योंकि हम लोगों को एल.एल.बी. की पढ़ाई में दुनिया के विभिन्न देशों का संविधान सिखाया गया था। यह संविधान दिल्ली में बना और उसके बाद अव्यक्त बापदादा का संदेश आया कि यह संविधान 21 जनवरी, 1969 से प्रभावी माना जायेगा जबकि हमने इसे मई, 1969 में दिल्ली कमलानगर में फाइनल किया था। Retrospective Effect से दैवी संविधान को बनाने की जो रस्म बाबा ने बनाई, वह आज भी इंग्लैण्ड में है और जब वहाँ कोई राजा शरीर छोड़ता है तो तुरंत उसके वारिस की राजा के रूप में नियुक्ति हो जाती है और फिर घोषणा की जाती है 'Long live the king, king is dead.' इस प्रकार की घोषणा के द्वारा राजसत्ता सदैव कायम रहती है और बीच में किसी भी प्रकार का विराम नहीं आता है।

अव्यक्त बापदादा ने विश्व विद्यालय को लौकिक दुनिया के कानून में रजिस्टर्ड कराने की मना की। शिवबाबा ने माउंट आबू को मुख्यालय के रूप में चुना। जब हम कानून की दुनिया में आगे बढ़े, तब मालूम हुआ कि क्यों 1950 में बाबा ने माउंट आबू को मुख्यालय के रूप में चुना। इसका दूरदेशी परिणाम 1969 के बाद के राजस्थान के Rajasthan Public Trust Act में हमने देखा।

भारत में जहाँ-जहाँ धर्मादा और धार्मिक संस्थाओं को रजिस्टर्ड करने का कानून है, वहाँ पर इतना सख्त कानून है कि कोई भी संस्था का 1,000 रुपये से ज्यादा खर्च या आमदनी हो तो उसे उस राज्य के ट्रस्ट एक्ट के अंतर्गत रजिस्टर्ड कराना ज़रूरी है। परंतु राजस्थान के अंदर उन्हीं संस्थाओं को रजिस्टर्ड कराने की ज़रूरत है जो या तो सरकार से अनुदान (Subsidy) लेती हैं या उन्हें सरकार से आर्थिक सहायता (Grant) मिलती है या वे जनता से दान (Donation) के रूप में धन स्वीकार करती हैं।

जब 1969 में दैवी संविधान का निर्माण किया तब एक दैवी परिवार का निर्माण होना तय हुआ जिसके अंदर अलौकिक माता-पिता के रूप में ब्रह्मा बाबा और मातेश्वरी सरस्वती थे और हम सब बच्चे आपस में भाई-बहन के रूप में इस 'दैवी परिवार' के सदस्य थे।

इसलिए जब राजस्थान के कानूनी अफसरों के सामने बात आई, तब हमने 'दैवी परिवार' की परिभाषा समझाई और बताया कि जैसे लौकिक परिवार में माता-पिता और बच्चे होते हैं, पिता घर चलाने के लिए माता को पैसे देता है तो पिता ने माता को दान दिया, ऐसा नहीं कहते हैं। कई बार पिता बाहर गाँव या विदेश में होता है तो

घर चलाने के लिए धन भेजता है तो वह धन दान के रूप में परिवार के सदस्यों को नहीं मिलता। इसी प्रकार से इस विश्व विद्यालय में भी सब आपस में भाई-बहन हैं। कोई भाई कमाता, कोई सेवा करता, कई बहनें भी नौकरी करतीं और अपना धन देकर इस ईश्वरीय परिवार को चलातीं इसलिए संस्था के बहन-भाई इस परिवार को चलाने के लिए जो धनराशि देते हैं, यह दान नहीं है क्योंकि वे परिवार के सदस्य हैं। हम लोगों से धन दान नहीं लेते हैं लेकिन परिवार का एक सदस्य दूसरे को धन की मदद करता है। राजस्थान पब्लिक ट्रस्ट एक्ट के अंतर्गत हम जनता से धन दान नहीं लेते हैं। हमारी इस बात को राजस्थान के अफसरों ने माना और आज तक विश्व विद्यालय को रजिस्टर्ड कराने की ज़रूरत नहीं पड़ी।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने बहुत स्पष्ट शब्दों में फैसला दिया कि संस्था का मुख्यालय जिस राज्य में होगा, उसी राज्य का कानून ही उस संस्था की सभी शाखाओं पर लागू होगा। इस कारण भारत के अन्य किसी भी राज्य के कानून के मुताबिक हमारी किसी भी शाखा को रजिस्ट्रेशन कराने की ज़रूरत नहीं है। इस प्रकार से लौकिक कानून की अनेक बातों से शिवबाबा ने यज्ञ को सुरक्षित किया है। ❖

क्या वो दिन फिर लौट आयेंगे ?

● ब्रह्माकुमार सुभाष, ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)

कभी वो 1983 के दिन याद आते हैं, मनमोहिनी दादी जी, जानकी दादी जी, चंद्रमणि दादी जी, मनोहर दादी जी, शान्तामणि दादी जी, रतनमोहिनी दादी जी, आनंदकिशोर दादा जी, विश्वरतन दादा जी, चन्द्रहास दादा जी, जगदीश भाई जी, निर्वैर भाई जी, वृजमोहन भाई जी, रमेश भाई जी जैसी महान हस्तियाँ ओमशान्ति भवन में आगे की पंक्ति में बैठते थे और हमारी प्यारी प्रकाशमणि दादी जी बहुत ही निराले अन्दाज में मुरली सुनाने का आनंद लेती व देती थी, उस अन्दाज का वर्णन करना बड़ा कठिन है। क्या वो अलौकिक सुख था! दादी जी रसभरी मुरली सुनाती रहें और हम सभी सुनते रहें, ऐसा दिल करता था। सेवा के कारण कभी मुरली के बीच में उठना पड़ता था लेकिन मन सारा समय हॉल में ही लगा रहता था।

खिलाड़ी-पन

खेल का नाम सुनते ही सबको कितना अच्छा लगता है इसलिए तो दादीजी ने पीसपार्क अपने हाथों से संवारा था। बाबा के पवित्र, महान, प्यारे बच्चे और कहीं खेलने जायें इससे तो अच्छा है अपना कोई स्थान हो इसलिए मानो पीसपार्क का निर्माण हुआ। पीसपार्क का नाम लेते ही दादीजी के अन्दर उमंग-उत्साह

आता और तुरन्त पिकनिक का प्रोग्राम बन जाता। दादीजी पीसपार्क में मधुवन निवासियों के साथ क्रिकेट, बेडमिन्टन, खो-खो, मटका तोड़, रास, भंगड़ा आदि सब खेलों,

नृत्यों में भाग लेती थी। जैसे ही दादीजी पीसपार्क में पहुँच जाती, हरेक टीम का मन होता, दादीजी हमारे पास आयें। सचमुच, दादीजी हर टीम के साथ सम्मिलित हो जाती और सभी में इतना उमंग-उत्साह आता जो अपने आप को भूल जाते थे। स्वर्ग आ रहा है...., दादीजी का बहुत प्रिय खेल था।

सरलता की मूरत

एक बार की बात है, दादीजी कहीं सेवा पर गयी थी। जब अहमदाबाद से वापस आ रही थी तो रास्ते में उनकी अम्बेसडर गाड़ी खराब हो गई। तब फोन की इतनी सुविधा नहीं थी। दादीजी व उनके साथियों ने वहीं एक पेड़ के नीचे दो घंटे इन्तजार किया। बाद में आबू की एक गाड़ी दादी जी को देखकर रुक गयी। दादी जी को पूछा, दादी जी, गाड़ी खराब हुई है, तो मुझे सेवा का



अवसर दो ना, मैं आपको पहुँचाता हूँ। पहले तो दादीजी ने सेकण्ड भर विचार किया फिर 'बाबा ने ही यह गाड़ी भेजी है', यह समझ स्वीकृति दी तो वह भाई बहुत खुश हुआ। इतनी बड़ी संस्था की प्रशासिका होने के बाद भी उनके अन्दर इतनी सरलता थी कि कोई बात कहनी होती तो कहती थी, ऐसा दादी का विचार है, दादी ने कहा है.... जैसे कि मैं-पन से बिल्कुल दूर थी दादी जी।

एक-एक का विशेष ध्यान

हर वर्ष बाबा के अवतरण के समय से पहले सभी किचन वालों के साथ बैठकर, उनकी बातें सुनकर उन्हें अति आवश्यक चीजों की सुविधा देती थी। भण्डारे की सफाई, सफेदी आदि कराने का निर्देश देती थी। अलग-अलग विभागों का चक्कर लगाकर सबकी आवश्यकताओं पर ध्यान देती थी। कोई बीमार होता तो दादीजी का

उसके ऊपर विशेष ध्यान रहता था। कंधे के दर्द के लिए जब मैं देशी दवाई करके वापस आया तो दादी जी ने पूछा, कैसे हो? मैंने कहा, दादी जी, कंधे 95 प्रतिशत ठीक हैं। मीठी दादी जी ने कहा, पूरा ठीक करके ही लौटना था ना। इतना एक-एक का ध्यान रखती थी। बीच-बीच में क्लास में ही पूछती थी, सभी की तबियत ठीक है ना? फिर कहती थी, दादीजी की तबियत भी अच्छी है। यह सुनकर सभी खुशी से तालियाँ बजाते थे।

शिक्षा व सावधानी

दादीजी जब भी भोलेनाथ के भण्डारे में आती थी तो अवश्य पूछती थी, आज भोजन क्या बना है? मैं सीधी भाषा में कहता था, दादी जी, दाल, चावल, सब्जी, रोटी व पकौड़ा भी है। दादी जी हँसकर कहती थी, ऐसे बताते हैं कि सफेद मूँग दाल, गोभी की सब्जी और आलू का पकौड़ा, बाकी चीजें तो होती ही हैं, वो बताने की जरूरत नहीं होती। प्यार से शिक्षा और सावधानी देती थी कि भोजन परोसते समय बहुत ज्यादा नहीं डाल देना, भले ही दुबारा लेने आयें, मना नहीं करना, बाबा के यज्ञ का प्रसाद व्यर्थ नहीं जाना चाहिए, आजकल सब्जी बहुत महंगी हो गयी है। कभी-कभी तो बड़ी क्लास में सभी को कहती थी, देखो, आज एक बूढ़ी माता मेरे पास आयी और दस पैसे, पाँच पैसे

की गठड़ी मुझे दी और बोली, दादीजी, यह मेरी साल भर की कमाई है, खास बाबा की भण्डारी के लिए इकट्ठे करती हूँ... मेरी आँखों में आँसू आ गए। देखो, हमें बाबा के यज्ञ का कणा-दाना कितने प्यार से खाना चाहिए! एक दाना भी व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। वैसे तो ब्रह्मा भोजन के लिए देवता भी तरसते हैं, ऐसी बातें बताकर यज्ञ के प्रति प्यार पैदा करती थी।

बाबा के दिल में दादी जी

सन् 1991 की बात है, एक दिन दादी जी की छाती में सुबह 6 बजे जोर से असहनीय दर्द हुआ। मधुबन तब छोटा-सा घर था, तुरन्त सभी को पता चल गया। मैं भी दादीजी के कमरे के बाहर पहुँच गया। डॉक्टर व बड़े भाई-बहनों के प्रयास चल रहे थे, हम तो छोटे थे, हमें अन्दर कौन जाने देता? मैं दो मिनट के बाद वहाँ से सीधा बाबा के कमरे में गया, मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे। मैंने बाबा को कह दिया, बाबा, मेरी माँ को कुछ नहीं होना चाहिए। तभी मैंने एक दृश्य देखा, बाबा के दिल में दादीजी मुसकरा रही थी और बाबा भी मुसकरा रहे थे। बाबा मुझे कह रहे थे, माँ को कुछ नहीं होगा। मैं तुरन्त अपने को हलका महसूस करने लगा और बाबा के कमरे से निकल भण्डारे में सेवा करने चला गया क्योंकि बाबा द्वारा दिए गए अनुभव पर मेरा पूरा

विश्वास था। सचमुच 20-25 मिनट के बाद समाचार मिला कि दादीजी की तबियत ठीक है।

उमंग-उत्साह

हर सुबह की रोशनी के साथ दादी जी उमंग भरी नई-नई बातें सबके दिलों में भर देती थी। दादी जी के दिल में सदा ही रहता था, बाबा की प्रत्यक्षता के लिए कुछ नया करें। कभी मुरली क्लास में कहती थी, 'एक बात सुनाऊँ-सुनाऊँ, है तो प्राइवेट लेकिन आप तो घर के बच्चे हो, आज दादीजी को यह संकल्प आया कि लाखों की सभा होनी चाहिए, तभी बाबा की प्रत्यक्षता होगी। दादीजी के इसी संकल्प के फलस्वरूप विशाल कार्यक्रमों का आयोजन प्रारम्भ हुआ। दादी कोई भी बात अपने दिल में नहीं रखती थी, तुरन्त सभी के साथ बाँट देती थी, इसी कारण सभी के अन्दर उमंग-उत्साह आता था और सेवा की नई-नई योजनाएँ सफल होती थीं।

सभा के बीच

सेवाधारियों का परिचय

जब कभी मुरली के बीच में धोबी, कार्पेंटर, टेलर, पेन्टर, कन्स्ट्रक्शन आदि का नाम आता तो दादीजी उन क्षेत्रों से सम्बन्धित सेवाधारियों (बाबा के बच्चों) को क्लास के बीच में उठाती। उनका परिचय देती तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। एक दिन मुरली में

मक्खन की बात आई। दादीजी ने पूछा, भण्डारे में मक्खन कौन निकालता है? इस सेवा के निमित्त मैं खड़ा हुआ, बहुत शरमा भी रहा था क्योंकि पहला ऐसा मौका था। दादीजी ने मुझे स्टेज पर बुलाया, सबसे परिचय कराया और एक गुलाब का फूल दिया। मेरी खुशी का पारावार न रहा। ओमशान्ति भवन में कितने लोग थे लेकिन मुझे कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। बस आनंद ही आनंद। दादीजी छोटी-से-छोटी सेवा करने वाले को भी ऐसे उमंग-उत्साह देती थी।

उमंग-उत्साह का झरना

एक दिन ऐसा हुआ कि पाण्डव भवन में दोपहर का भोजन लिफ्ट से चढ़ाना था, लिफ्ट अचानक खराब हो गयी। हम सब लिफ्ट ठीक करने की कोशिश में लगे हुए थे लेकिन ठीक नहीं हुई। अब 12 बजने में पाँच मिनट बाकी थे। मैं भोली दादीजी के पास गया। भोली दादी जी ने मुझे बड़ी दादी जी के पास भेजा। मैं उनके कार्यालय की तरफ दौड़ा, वे कार्यालय में कोई पत्र पढ़ रही थी। जैसे ही मैं सामने गया, उन्होंने पूछा, बोलो, क्या हुआ? मैंने कहा, दादी जी, लिफ्ट खराब हो गई है, भोजन डायनिंग हॉल में पहुँचा नहीं है। दादी जी तुरन्त उठकर खड़ी हुई और भण्डारे में आई। वहाँ जो भाई थे उन्होंने को उमंग-उत्साह दिया, चलो...चलो...पाण्डवो, महावीरो,

नीचे से भोजन लाओ। दादीजी का कहना था और करीब 25 पाण्डव एक साथ किचन में दौड़े और पाँच मिनट में भोजन ऊपर पहुँच गया, ठीक 12 बजे भोजन खिलाने की सेवा प्रारम्भ हो गई।

माँ की ममता

ऐसे दृश्य इन आंखों को देखने को मिले जो कभी भूलते नहीं। निर्वैर भाई मुंबई से बायपास सर्जरी के बाद प्यारे मधुबन पहुँचने वाले थे और यहाँ माँ अपने बच्चे के इन्तजार में बाँहें पसारे बैठी थी। जैसे ही निर्वैर भाई कार से मधुबन के प्रांगण में उतरे, दादीजी ने अपनी अनंत बाँहें पसार दी और निर्वैर भाई उनमें समा गये। दोनों के दिल भर आये थे। उसके बाद दादीजी उन्हें स्वयं बाबा के कमरे में लेकर गयी। ओहो! कैसे वो आंखों को सुख देने वाले क्षण थे!

वो थी तो कुमारी लेकिन माँ बनकर चाहे छोटा हो या बड़ा, बूढ़ा हो या जवान, सबके दिलों पर राज कर बैठी थी। सब उनको माँ-माँ कहते थकते नहीं थे। सचमुच उनके हर कर्म, व्यवहार से माँ की ममता छलकती थी। जैसा सामने वाला होता था, दादी वैसे ही बन उससे व्यवहार करती, इस कारण हरेक को लगता था, दादी मेरी है। कोई बात होती तो सीधा दादी के पास जाकर बताता था, तो दादी सान्त्वना देती थी।

दादी माँ, दादी माँ की धुन

जब मधुबन में सन्त सम्मेलन हुआ, बड़े-बड़े महामण्डलेश्वर पधारे। पहले दिन का कार्यक्रम पूरा कर, भोजन के पश्चात् विश्राम करने सुखधाम पहुँचे। हमारी भोली-भोली दादी सभी दादियों के साथ बड़े प्यार से उनका हालचाल लेने वहीं पहुँच गई तो उनको अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि इतनी बड़ी हस्ती अपनी साथी दादियों के साथ हमारा हालचाल लेने व शुभरात्रि करने हमारे एक-एक के पास आये। फिर क्या, दूसरे दिन के भाषण में दादी माँ, दादी माँ, यही धुन गुंजारित रही।

प्यार से पिघला देती थी

एक दिन अरविन्द त्रिवेदी, जिन्होंने रामायण में रावण का जोरदार पार्ट बजाया था, आए। जो देखे वही परिचय दे कि रावण पधारे हैं। जब दादीजी से मिले तो दादीजी ने उन्हें प्रेम से कहा, लंकेश जी, आओ, बाबा के घर में आपका स्वागत है। यह सुनकर वो पिघल गये और ओमशान्ति भवन में उन्होंने अनुभव में सुनाया कि सच, दादी जी कितनी महान हैं! मुझे लंकेश कहके सम्मान देती हैं। प्यारी दादी जी, ज्ञान से ज्यादा अपने प्यार भरे व्यवहार व सच्चे प्यार से सभी को पिघला देती थी। ऐसी प्यारी दादी को शत् शत् नमन!



दीर्घकाल का अभ्यास बहुत काम आया

● रेखा अग्रवाल, मुंबई (बोरिवली)

सुबह 3.30 बजे जब आँखें खुलीं तो कमरे में युगल को न देखकर उनके मोबाइल पर फोन लगाया, सामने से अन्जान व्यक्ति की आवाज़ आई। वह पूछ रहा था, आपकी गाड़ी का नंबर क्या है? मैंने नंबर बताया तो वह कहने लगा, हेमंत अग्रवाल (मेरे पति) दुर्घटनाग्रस्त हो गये हैं, आप अमुक स्थान पर आ जाइये। समाचार सुनते ही थोड़ी-सी घबराहट हुई क्योंकि सूचना देने वाले ने कहा कि उनकी मृत्यु हो चुकी है। छोटे बेटे को उठाया, उसे अमुक स्थान का पता लिखने को कहा। साक्षीभाव में थी। घर से वहाँ पहुँचने तक स्वमानों की माला मन में घूम रही थी। अंदर की घबराहट को स्वमानों की स्मृति द्वारा शक्ति में परिवर्तन करने में लगी थी।

**जब भी भावनाओं में बहती,
बाबा शक्तियों से भर देते**

शरीर की पहचान करने के बाद सभी को खबर कर दी गई। पोस्टमॉर्टम के लिए हम सभी हॉस्पिटल के बाहर सुबह से बैठे थे। उस बीच मन में कई उतार-चढ़ाव आए, बाबा से रूहरिहान हुई, बाबा, यह अचानक का पेपर मेरे सामने इस प्रकार से आना था? बाबा मैं आपकी महावीर बच्ची हूँ, इष्ट देवी हूँ, मास्टर

सर्वशक्तिवान हूँ...। बाबा की तरफ से शक्तियों की किरणों के रूप में करंट-सा आता और मैं चुंबक के समान उसे खींच-खींच कर अपने अंदर भर रही थी। यह क्रम लगातार चलता रहा। जब भी भावनाओं में बहने लगती, बाबा शक्तियों से भर देते। हॉस्पिटल से घर आने तक मीठे बाबा सूक्ष्मवतन के नज़ारे दिखाते रहे। अनुभव हुआ, बापदादा मेरे युगल को अपनी गोद में लिए प्रकाश के झूले में झूल रहे हैं। उस वक्त ऐसा आभास हो रहा था, मैं इस धरती पर नहीं हूँ। शरीर से व मन से स्वयं को बहुत ही हलकी महसूस कर रही थी। बाबा ने मुझे अपनी गोद में बिठा रखा था, जैसेकि बीमार बच्चे को माँ एक पल भी अकेला नहीं छोड़ती। घर आये, मृत देह सामने थी, लग रहा था मानो कोई दृश्य आँखों के सामने से गुज़र रहा है; उसे देखने वाली मैं कौन हूँ, यह आत्म-स्मृति भी बनी हुई थी।

क्षमा दी और क्षमा ली

सारा रूहानी परिवार युगल की आत्मा को योगदान दे रहा था। मैंने भी उनकी आत्मा से रूहरिहान शुरू की। क्षमा दी और क्षमा ली कि हमने कई अच्छे व बुरे दिन साथ-साथ बिताये, आपका और हमारा साथ यहीं तक ही



था। आप बहुत ही भाग्यवान हो क्योंकि आपने सदैव सभी की दुआएँ ली हैं, सारा रूहानी परिवार आपको योगदान दे रहा है – इस प्रकार शिवशक्ति बनकर मैं बाबा से शक्तियाँ अपने अंदर भरकर उन्हें देती रही। लगातार 3-4 घंटे तक यही क्रम चलता रहा। उस वक्त जो सकाश (किरणें) देने का पार्ट था वह बहुत ही अद्भुत था। ऊपर से लगातार शक्तियों की किरणें मुझ पर तेज़ी से बरस रही थीं और मुझसे युगल की आत्मा में प्रवाहित हो रही थीं, ऐसा अनुभव होता रहा। अंतिम विदाई का समय आया तब भी युगल की आत्मा से बातें की, आप आगे की यात्रा के लिए प्रस्थान करें, यहाँ की चिंता बिलकुल ना करें, हम यहाँ पर सब कुछ संभाल लेंगे। आपका भविष्य बहुत ही सुंदर होगा। जो कुछ भी आपको यहाँ नहीं मिला है, वह सब आगे मिले, यह हमारी शुभ भावना है।

जो आपके लिए दुःखी हो रहे हैं, वे केवल इसी जन्म के साथी थे, आप आगे बढ़ो, पीछे मुड़कर मत देखो। आपकी यात्रा शुभ हो, मंगलमय हो।

लक्ष्य की स्मृति से संभल गई

दूसरे दिन सुबह 4 से 8 बजे तक योग किया और शिवशक्ति बनकर उस आत्मा की फोटो को सामने रख सकाश दी। शाम को जब शोक-सभा आरंभ हुई तब आँखों से आँसू बाहर आने ही वाले थे कि मैंने बाबा से कहा, बाबा, यदि रोना आया तो इज्जत आपकी जायेगी, मुझे संभाल लो। तभी बाबा ने सेंटर से आई हुई बहन, जो ज्ञान-अमृत पिला रही थी, के मस्तक पर लक्ष्मी-नारायण का दृश्य दिखा दिया। लक्ष्य नज़र आते ही संभल गई। सांत्वना देने अर्थ आने वाली हर आत्मा के प्रति सकाश का पार्ट प्रयत्न किये बिना ही स्वाभाविक चल रहा था, सहज रीति से चल रहा था। मैं स्वयं भी इस सहजता से अचंभित थी।

पहाड़ बना राई

तीसरे दिन, बाबा की प्रेरणा द्वारा घर में सात दिवसीय कोर्स की व्यवस्था हुई। सांत्वना देने आने वाली हर आत्मा ज्ञान-अमृत पीकर तृप्त होकर जा रही थी। युगल की आत्मा की फोटो को देखते हुए उनसे बातें करते हुए मैंने उन्हें भी यह कोर्स कराया। जब शुभ कामना बैंक की सेवायोजना चली थी तभी से मेरा अभ्यास मनसा सेवा का चल रहा है। जितने भी लोग आते रहे, सभी के प्रति मनसा सेवा बाबा ने करवाई। बाबा ने इस अभ्यास द्वारा पहाड़ जैसी परिस्थिति को राई से रूई बनाकर जो साहस, शक्ति और बल भरा, दिल ने यही कहा, बाबा आपका शुक्रिया!

इस अनुभव के आधार पर मैं यह बताना चाहती हूँ कि बाबा द्वारा सौंपी हुई मनसा सेवा, जो विश्व कल्याण अर्थ है, उसमें स्व-कल्याण स्वतः समाया हुआ है। जो भी शक्ति हमें बाबा से प्राप्त होती है, यह ऐसा वरदान है जिससे मनवांछित फल पाया जा सकता है। ❖

नई जिन्दगी मिली

ब्रह्माकुमार नन्देसिंह,
जिला कारागार, शाहजहाँपुर

बचपन से ही मैं एक जिज्ञासु प्रवृत्ति का बालक था। युवावस्था में पदार्पण करने के बाद मेरी धार्मिक प्रवृत्ति बलवती होती चली गयी, इसके चलते मैंने लगभग ग्यारह गुरुओं की शरण ली परन्तु सभी में भिन्नता पाकर मेरा मन बेचैन रहने लगा। मैं असन्तुष्ट व भ्रमित होने लगा और एक तरह से नास्तिक भी हो गया। माया के वशीभूत होकर अपराध कर बैठा और जेल आ गया। यहाँ काफी चिंतित रहने लगा तथा अवसादग्रस्त हो गया। अतः पुनः पूजा-पाठ पर ध्यान देने लगा परन्तु कोई सफलता दिखाई नहीं दी।

जेल में ही “ॐ शान्ति” सेवाकेन्द्र की ओर से ज्ञान-दान का विधिवत् आयोजन होता था, मैं भी एक दिन वहाँ पहुँच गया, मुझे कुछ सन्तुष्टता मिली। फिर मैंने राजयोग तथा ईश्वरीय ज्ञान सीखा, मेरी सारी चिन्तायें दूर हो गईं और आज मैं अपने आप को तरोताज्ञा महसूस करता हूँ। मुझे वास्तव में परमानन्द की अनुभूति होने लगी और दुःख-दर्द अब मेरे पास नहीं आते। मुझे इस मिशन ने एक नई जिन्दगी दी है और मैं इसका आजीवन आभारी रहूँगा। जेल से बाहर निकलकर भी मैं अपने तन, मन तथा धन से समर्पित रहकर जन-जन में इस ज्ञान की अलख जगाऊँगा। मुझे इस बात की चिन्ता लेशमात्र भी नहीं रही कि मैं एक अपराधी हूँ बल्कि आत्मा यह कहती है कि “स्वयं शिव बाबा की नज़र मुझे एक सेवाव्रती बच्चे के रूप में देख रही है।” यह सब मैंने इस मिशन से पाया और आजीवन मैं इसका प्रकाश जन-जन में पहुँचाता रहूँगा, यह मेरा प्रण है। ❖

बीती को भुलाइये

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

एक बहुत सुन्दर महावाक्य है, Instead of questioning the past, put a fullstop to it. भूतकाल के प्रति प्रश्न कि यह क्यों हुआ था, कैसे हुआ था, उठाने के बजाय पूर्ण विराम लगा दीजिए। जब वाक्य पूरा होने पर पूर्णविराम लगा देते हैं तो आगे लिखना सहज हो जाता है और लिखे हुए को पढ़ना भी सहज हो जाता है, नहीं तो वाक्य आपस में मिल जाते हैं और लिखत समझ में नहीं आती। बीते हुए समय और वर्तमान समय के विभाजन के अभाव में जीवन उलझा-सा हो जाता है। जीवन का उद्देश्य खो जाता है। भूतकाल को पकड़ने की नाकाम कोशिश में वर्तमान छूट जाता है। वर्तमान का वह क्षण कोई उपहार दिए बिना ही भूत बन जाता है।

नया पाने के लिए पुराने को भूलना अनिवार्य

एक विद्यार्थी जब एक कक्षा पास कर लेता है तो उस कक्षा में पढ़ी गई पुस्तकों से मन हटा लेता है और अगली कक्षा की नई पुस्तकों में मन लगा लेता है। उसे पता है, पुरानी कक्षा की पुस्तकें पास रखने और उनमें पढ़ी हुई बातों को याद रखने से वह अगली कक्षा में नहीं जा पाएगा। आगे जाने के लिए पिछला छोड़ना और भूलना

पड़ता ही है भले ही वह कितना भी प्रिय क्यों न रहा हो। जीवन-यात्रा में भी नया पाने के लिए पुराने को भूलना अनिवार्य है।

पुरानी गलती को याद करें सुधारने के लिए

जब हम कोई लेख लिखते हैं तो लिखे हुए का सिंहावलोकन करने के लिए उसे फिर पढ़ते हैं। उसमें कोई त्रुटि रह गई हो तो उसे ठीक करने के लिए पढ़ते हैं परन्तु बार-बार उसी को पढ़ने में लगे रहेंगे तो आगे नहीं लिख पाएंगे। इसी प्रकार, जो कुछ पीछे छोड़ आए उसे पीछे मुड़-मुड़ कर देखते रहेंगे तो आगे ठोकर खा जाएंगे अर्थात् आगे वाली प्राप्ति को खो देंगे। इसलिए जीवन-यात्रा में आगे बढ़ें। पुरानी गलती को यदि सुधारने के लिए याद किया है तो ठीक है, नहीं तो बार-बार यूँ ही उसे याद करके वर्तमान में और गलतियाँ ना करें।

कड़वी स्मृतियाँ हैं सर्प-बिच्छू की तरह

मान लीजिए, हमारे घर में कोई सर्प, बिच्छू या हानिकारक जीव अचानक कहीं से घुस आए तो हम उसे किसी भी तरीके से घर से बाहर भगाने का प्रयास करते हैं। इसके लिए हम यह नहीं सोचते कि आज तो इसे रहने दें, कल भगा देंगे। तुरन्त भगाने

का पुरुषार्थ करते हैं। हमें मालूम है, ये घर में घुसे रहेंगे, कहीं छिपे पड़े रहेंगे तो कभी भी, कोई भी नुकसान कर सकते हैं। इसी प्रकार पुरानी और कड़वी स्मृतियाँ, अपनी या दूसरों की गलतियों की स्मृतियाँ भी इन घातक जीवों की तरह बहुत ही घातक होती हैं। यदि वे मन के पटल पर उभर आए तो तुरन्त उन्हें समाप्त करें, उनकी आवभगत न करें, उनको बिठाएँ ना, तुरन्त रवाना कर दें। ऐसी स्मृतियों से फायदा कुछ भी नहीं, नुकसान ही नुकसान है।

पुरानी बातें करती हैं गति को धीमा

कोई श्रेष्ठ मन्त्र हम मन में बार-बार दोहराते हैं इसलिए कि उस श्रेष्ठ विचार की दोहराई से मनोबल मिलता है। भक्त लोग ओम नमो शिवाय या हरि तुम शरणम् आदि-आदि मन्त्र दोहराते रहते हैं। दूसरी तरफ हम यह भी देखते हैं कि व्यर्थ या दुखदाई बीती हुई बात का भी न चाहते भी हम मन्त्र की तरह जाप करने लगते हैं। चूंकि इस प्रकार के जाप में कोई दम नहीं है इसलिए इसकी बार-बार की दोहराई हमारा दम निकाल देती है। यह हमारी हर अच्छी आदत, अच्छे स्वभाव पर हावी होकर उसे नष्ट कर देती है। हमें हंसना भुला देती है, लोगों से मिलना-जुलना बन्द करा देती है, अच्छे शब्द

बोलना, उमंग-उत्साह में रहना सब छुड़ा देती है। हम मुर्दे से बने उस बीती बात से चिपके रहते हैं। संसार को आगे बढ़ते देखते रहते हैं पर उस बात को अपनी गति पर चिपका कर, गति को रोक लेते हैं। उस बात से, उस घटना से, इच्छा के विरुद्ध इतना लगाव कि उसके लिए जीवन-यात्रा को ही ठप्प कर लेते हैं!

एक बार एक 25 साल के नौजवान से हमें मिलवाया गया और कहा गया कि यह कभी हंसता नहीं है। हमने कारण पूछा तो उसने बताया कि मैंने बेकरी का काम सीखकर, अपनी बेकरी लगाई पर उसमें घाटा लग गया और दो लाख का कर्जा चढ़ गया। फलस्वरूप, मुझे अपने पुराने मालिक के पास पुनः नौकरी करनी पड़ी। यूँ तो मैं सारा दिन खूब काम करता हूँ पर मन में केवल एक बात चलती रहती है, मुझे घाटा क्यों लगा, कर्ज क्यों चढ़ा, मेरा पैसा क्यों डूबा, मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? काम तो करता हूँ, पता है, काम करूँगा तो ही मालिक तनखाह देगा पर मन उस घाटे की बात से इतना चिपक गया है कि मैं हंसना, खेलना, मिलना-जुलना सब से दूर हो गया हूँ।

समाधान है राजयोग

उपरोक्त स्थिति एक प्रकार का अवसाद है। इसका इलाज है राजयोग। राजयोग के अभ्यास में हम हर पल नवीन उमंग-उत्साह देने वाले,

आशाजनक, पवित्र, सुखदाई विचार मन में लाते हैं। ये विचार स्वयं परमात्मा पिता अपने महावाक्यों द्वारा हमें प्रदान करते हैं। उन महावाक्यों का प्रतिदिन श्रवण, मनन, चिन्तन हर प्रकार की मानसिक विकृति से बचाता है। वे महावाक्य ही मुरली कहलाते हैं। राजयोग के अभ्यास में हम मन को जो ईश्वरीय विचार देते हैं उन की बार-बार दोहराई से अतीन्द्रिय आनन्द मिलता है। बीते समय के व्यर्थ विचार जीते जी मुर्दा बना देते हैं और ईश्वरीय विचार खुशी से भर देते हैं, तो हम अपने मन को खुशी वाले विचार क्यों न दें?

नापसंद बात की दोहराई क्यों?

जब गाड़ी या स्कूटर से या पैदल भी रास्ता तय करते हैं तब मार्ग में कई अवरोध आ जाते हैं। जाम, दुर्घटना, बरसात के कारण फिसलन आदि से रास्ते रुक जाते हैं। उस समय हम यह क्यों, वह क्यों, इस प्रकार सोचने में समय खराब ना करके तुरंत दूसरे सम्भव रास्ते को बुद्धि में इमर्ज करते हैं और उस दिशा में बढ़ चलते हैं। इसी प्रकार, जीवन भी एक यात्रा है, इसमें कई कारणों से कई अवरोध खड़े हो जाते हैं। जीवन-यात्रा में अवरोध आ जाने पर यह सोचने की बजाय कि इसने ऐसा क्यों किया या इसने ऐसा क्यों नहीं किया, हम भी तुरंत दूसरा उपाय सोच लें, तो समय और

शक्तियों की बचत हो सकती है। जिसने जो नापसंद बात कर दी, उसको बार-बार सोचना तो एक प्रकार से उस नापसंद बात का गुणगान करना है। नापसंद बात को तो भुलाया जाता है, उसे बार-बार मन में लाकर उसकी स्मृति को पक्का करने से तो और ही ज्यादा नुकसान हो जाता है।

राह नहीं, राहगीर आगे बढ़ता है

कई लोग सोचते हैं, बातें खत्म होंगी तब हम आगे बढ़ेंगे लेकिन नहीं, बातें खत्म ही तब होंगी जब हम आगे बढ़ेंगे। रास्ता आगे नहीं बढ़ता, चलने वाला आगे बढ़ता है। कोई राहगीर सोचे, राह आगे बढ़े तो मैं आगे बढ़ूँ। ऐसा नहीं होगा, रास्ता तो वहीं रहेगा। उसे तय करने वाला ही आगे बढ़ेगा। साइडसीन कभी आगे नहीं बढ़ते, वे तो वहीं रहते हैं, उन्हें देखने वाले को आगे बढ़ना है।

प्राकृतिक परिवर्तन की तरह अन्य परिवर्तन भी स्वीकार करें

हानि-लाभ, दुख-सुख, जन्म-मृत्यु ये सब इस रंगमंच पर धूप-छांव की तरह आते-जाते हैं। ऋतु परिवर्तन की तरह मानव की परिस्थितियाँ भी परिवर्तन होती रहती हैं। यदि हम इस प्राकृतिक परिवर्तन को स्वीकार करते हैं तो हमें अन्य परिवर्तन भी स्वीकार कर लेने चाहिए। जैसे रात के बाद दिन अवश्य आता है उसी प्रकार पिछली भूलों से सीख लेकर आगे बढ़ने वाले को मंजिल अवश्य मिलती है। ❖

मूल्यों के प्रसार का माध्यम : खेल

● ब्रह्माकुमारी जयश्री, विक्रोली (मुंबई)

इक्कीसवीं सदी में खेल संस्कृति को बहुत ही महत्त्व प्राप्त हो रहा है क्योंकि खेल एक ऐसा विषय है जिसमें रंग, रूप, देश, धर्म, भाषा की सीमायें लांघकर व्यक्ति सहजता से स्नेह और मित्रता की बोली बोल सकता है, आनंद, खुशी, उमंग और उत्साह की लेन-देन कर सकता है। देशों के आपसी संबंध सुधारने के लिए, व्यापार बढ़ाने के लिए तथा अपने देश की संस्कृति का प्रचार-प्रसार कराने के लिए भी खेल एक प्रमुख मुद्दा बनता जा रहा है। चीन और अमेरिका के पुराने शीतयुद्ध तथा भारत एवं चीन की दुश्मनी खत्म होने का आधार 'पींगपांग पॉलिनी' मतलब टेबलटेनिस खेल और खिलाड़ी हैं। यह भी कहा जा रहा है कि भारत-पाक के बीच के मतभेद क्रिकेट के द्वारा दूर हो सकते हैं। देश का नाम बाला करने एवं देशभक्ति की अभिव्यक्ति करने का भी माध्यम है खेल।

भारत का गौरव मेजर ध्यानचंद

खेल द्वारा देश-प्रेम, स्वाभिमान, सत्यता, निर्भयता की अभिव्यक्ति की बात करें तो मेजर ध्यानचंद सिंह जी का नाम सामने आता है। अन्य

महापुरुषों की भाँति उनका जन्मदिन (29 अगस्त) भी 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में भारत में मनाया जाता है। मेजर ध्यानचंद जी ने खेल के माध्यम से जिन मूल्यों को उजागर किया, देश उनकी सराहना करता है। देश को गौरवान्वित करने वाले इस हॉकी के जादूगर ने 1928 में एम्स्टर्डम (नीदरलैण्ड की राजधानी) में, 1932 में लॉस एंजिल्स में तथा 1936 में बर्लिन ओलंपिक में भारत को स्वर्ण पदक जिताकर देश का सम्मान बढ़ाया था। कहा जाता है, आस्ट्रिया तथा विना देश के लोगों ने मेजर ध्यानचंद जी का चार हाथ वाला पुतला बनाकर, चारों हाथों में चार हॉकी स्टिक्स दिखाई थीं। यह भारतवासियों के लिए गौरव की बात रही। उन्हें 1956 में भारत का उच्च नागरिक पुरस्कार 'पद्मभूषण' प्रदान किया गया।

जर्मनी में, 1936 की ओलंपिक हॉकी में मेजर ध्यानचंद का करिश्मा देखने के लिए स्वयं अडॉल्फ हिटलर भी अपने देशवासियों के साथ गये थे। मेजर ध्यानचंद के समर्पण को देखकर वे बहुत ही प्रभावित हुए थे। हिटलर ने उन्हें अपने देश में कर्नल

श्रेणी का पद प्रदान करना चाहा परंतु उस देशभक्त ने अपने देशप्रेम को बरकरार रखते हुए उसे नकारा। कहा जाता है कि मेजर ध्यानचंद जी ने, मानवता का संहार करने वाले हिटलर को सलामी न देकर अपनी निर्भयता और मानवतावादी दृष्टिकोण का सबूत दिया।

ओलंपिक है सर्वमान्य संस्कृति

आज खेल क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार और मूल्यों की गिरावट की वजह से डोपिंग का राक्षस खेल एवं देश का नाम बदनाम कर रहा है। खेल में आध्यात्मिक मूल्य अत्यधिक हैं परंतु खिलाड़ी उनसे दूर हैं। ओलंपिक केवल खेल प्रतियोगिता नहीं है बल्कि एक सर्वमान्य संस्कृति है। इसमें देश के सम्मान के लिए, कड़ी मेहनत और प्रामाणिकता से किए गए परिश्रम के साथ खिलाड़ी अपना सब कुछ दांव पर लगाने की तैयारी करता है। ओलंपिक विश्व बंधुत्व को बढ़ाने वाली संस्कृति है जिसका प्रदर्शन ओलंपिक के उद्घाटन अवसर पर दिखाई देता है। सफेद ओलंपिक ध्वज पर नीले, पीले, काले, हरे, लाल रंग की, एक-दूसरे में फँसी पाँच गोल कड़ियाँ दिखाते हैं जो पाँच

खण्डों का प्रतिनिधित्व करती हैं। ध्वज के साथ 'फास्टर, हायर, स्ट्रॉंगर' संदेश दिलाने वाले स्लोगन का प्रचार होता है जो उमंग, उत्साह तथा उन्नति के लिए प्रेरक है।

आध्यात्मिक शिक्षा से करें

माइंड कंडिशनिंग

ओलंपिक प्रतियोगिता शुरू होने से पहले सभी खिलाड़ी अपने देश के सम्मान, खेल की पवित्रता, प्रतियोगिता की गरिमा बनाये रखने के लिए वचनबद्ध होते हैं। उद्घाटन कार्यक्रम में ज्योति प्रज्वलित करने का कार्यक्रम सबसे ज्यादा रोमांचकारी होता है। इस अवसर पर हर देश अपनी कला-संस्कृति, उन्नति, शक्ति का भव्य प्रदर्शन करके विश्व पर अपना प्रभाव डालने का मौका लेता है। हर देश में ज्योति प्रज्वलित करने की अपनी अनोखी पद्धति होती है। वास्तव में ज्योति प्रज्वलन द्वारा आत्माओं में शांति, प्रेम एवं भाइचारे जैसी आध्यात्मिक भावना जागृत करना प्रमुख उद्देश्य होता है। सन् 1984 में, लॉस एंजिल्स में ओलंपिक ज्योति प्रज्वलित करने वाला खिलाड़ी, अंतरिक्ष यात्री की पोशाक पहनकर, पीठ पर गैस के दो सिलेंडर लगाकर, उनके आधार से गुब्बारे की तरह उड़कर, ज्योति तक जा पहुँचा और ज्योति प्रज्वलित की। उसी तरह 1992 में बार्सिलोना (स्पेन का एक शहर) में तीरंदाज द्वारा दूरी से अग्निबाण छोड़कर ज्योति को प्रज्वलित किया गया। हाल ही में चीन में हुए ओलंपिक में, तार से जुड़े हुए जिमनास्टिक खिलाड़ी ने 70 फुट ऊँची छलांग लगाकर, पूरे स्टेडियम की परिक्रमा करके ज्योति प्रज्वलित की। यदि खेल क्षेत्र से संबंधित व्यक्तियों की आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा 'माइंड कंडिशनिंग' की जाये तो खेल क्षेत्र में फैली हेराफेरी, भ्रष्टाचार, डोपिंग जैसी प्रमुख समस्याओं से खेलों का रक्षण हो सकता है। ❖

जब बाबा

मेरा बेटा बनकर आया

ब्रह्माकुमार अशोक गोयल, नरवाना (हरियाणा)

माता वैष्णो देवी की भक्ति करते-करते मुझे माता को भी शक्ति देने वाले भोलेनाथ शिवबाबा का सत्य परिचय मिल गया। उस दिन से मैं ब्रह्माकुमारी आश्रम पर जाकर नियमित राजयोग का अभ्यास करने लगा। घर तथा व्यापार की परेशानियाँ, उतार-चढ़ाव सब सहज ही पार होने लगे।

मार्च, 2013 के एक सतगुरुवार को, सुबह के आठ बजे मैं अपने लौकिक कार्य से पंजाब जा रहा था। गाड़ी खुद ही चला रहा था व बाबा की याद में था (गाड़ी में और कोई मेरे साथ नहीं था)। अभी अपने शहर से दो कि.मी. दूर ही गया था कि कानों में आवाज आई, 'पापा, सुरक्षा पेटी बांध लो'। मैंने फौरन पेटी बांध ली। थोड़ी और दूर गया तो देखा कि मेरे आगे चल रही सुमो अचानक नीचे गहरी खाई में चली गई है। मेरे सामने एक टैंकर आ गया और उसने मेरी गाड़ी को सीधी टक्कर मार दी। टक्कर जोरदार थी जिस कारण गाड़ी, ड्राइवर साइड से टैंकर के बराबर में घुस गई और एक तरफ से चकनाचूर हो गई।

लेकिन मुझ आत्मा को बाबा ने अपनी गोद में ले लिया। मुझ आत्मा के शरीर को खरोंच भी नहीं आई। टैंकर के पीछे एक लग्जरी गाड़ी भी थी, वह भी टैंकर के नीचे घुस गई। एक टैंकर के ओवरटेक करने से एक सुमो जिसमें सात लोग सवार थे, टैंकर के पीछे लग्जरी गाड़ी जिसमें चार लोग सवार थे और मेरी गाड़ी—इन तीनों की बुरी हालत हो गई पर बाबा की दुआ से एक भी भाई को चोट तो क्या खरोंच भी नहीं आई। इस तरह प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा के साथ सभी भाइयों को बचाया। शुक्रिया बाबा, आपका लाख-लाख शुक्रिया। ❖

ब्रह्मा बाप समान पालनहारी दादी जी

● ब्रह्माकुमार दिनेश, हाथरस

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि परमपिता परमात्मा शिव के अलौकिक गुणों की और पिताश्री ब्रह्मा बाबा की साकार पालना की अनुभूति दादी जी के द्वारा होती थी। ब्रह्मा बाबा की तरह ही निर्मानता और स्नेह के अविरल प्रवाह ने उन्हें सबका प्यारा बना दिया था। जिस प्रकार से लव और लॉ के साथ ब्रह्मा बाबा ने दादी, दीदियों की पालना की थी, वैसी ही पालना करने का अवसर वे नहीं चूकती थीं। ब्रह्मा बाबा की साकार पालना की अंतिम तीन शिक्षायें निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी भव का साक्षात् नमूना थीं आप। मैं यहाँ महिमामण्डन नहीं कर रहा हूँ लेकिन जिन्होंने भी उस परम तपस्विनी का सान्निध्य, चाहे मेरी तरह ही अल्पकाल का ही पाया हो, उन्हें भूल नहीं सकता।

बाबा ने दिया 'कुमारका' नाम

सन् 1992-93 में इस चंदन जैसे व्यक्तित्व से पहली मुलाकात में मेरी उम्र लगभग 22 वर्ष रही होगी। तीन-चार भाई-बहनों के साथ जब दादीजी से मिलने गया तब दादी जी ने पूछा था, 'अकेला ही आया है क्या?' एक बहन ने बताया कि दादी जी अभी यह कुमार है। यह सुनकर प्रसन्न हुईं। बाल ब्रह्मचारी वत्सों की आध्यात्मिक पालना करने का उन्हें बहुत शौक था।

संभवतः इसी गुण के कारण बाबा ने उन्हें कुमारका नाम दिया था।

भविष्य के प्रिंस हैं कुमार

एक बार कुमारों की योग-भट्टी में स्नेह से

भरपूर क्लास करा रही थीं, बीच में ही बोल उठीं कि आज इन्हें फ्रूट आइसक्रीम खिलाओ। फिर उन्हें याद आया कि अरे, बाबा तो हमें चाश-बादामी (चाशानी में बादाम डालकर) खिलाया करते थे सो इन्हें भी चाश-बादामी खिलाई जाये। उसी दिन सभी को चाश-बादामी और अगले दिन फ्रूट आइसक्रीम खिलाई गई। एक दिन क्लास में अंगूठी (चांदी की), जिस पर ज्योतिबिन्दु परमात्मा शिव का प्रतीक चिन्ह था, दिखाते हुए बोली कि तुम सभी सजिनियों की मंगनी एक साजन शिव बाबा के साथ हुई है इसलिए दादी ने यह अंगूठी खास तुम कुमारों के लिए बनवाई है। एक दिन डायमण्ड हॉल में ढेर सारे कुमार उनकी क्लास के लिए इकट्ठे थे। कुमारों को देखकर पास में बैठी हुई दादी जानकी जी से उन्होंने कहा, दादी, देखो इतने कुमार! यही भविष्य



में प्रिंस बनने वाले हैं। मेरी इच्छा इन्हें ताज और माला में देखने की हो रही है। देखो, कितना अच्छा दृश्य लगेगा जब सभी ताज, तिलक और माला पहने हुए होंगे। कल जब ये सभी इकट्ठे हों तो इनके सिर पर ताज होना चाहिए। एक बहन, जो नजदीक में खड़ी थीं, ने कहा, दादीजी, इतनी जल्दी? तब उन्होंने कहा, हाँ, दादी इन्हें इसी रूप में देखना चाहती है। मुझे अगले दिन सुखद आश्चर्य तब हुआ जब हम हजारों की तादाद में आये हुए कुमारों को डायमण्ड हॉल में चंदन का तिलक लगाकर ताज और माला भेंट की जा रही थी।

नम्रता की मूर्ति

इतने ढेर सारे पुरस्कार, सम्मानपत्र पाकर भी और विश्वव्यापी संस्था की मुख्य प्रशासिका होते हुए भी किसी से अभिवादन का प्रत्युत्तर हाथ जोड़कर ही देती थीं। कहती थी कि हेड बनने से हेडेक हो जाता है।

घोर निराशा के तम को प्रकाश में परिवर्तित करके अपने नाम प्रकाशमणि को साकार करने वाली दादी प्रकाशमणि जी का जन्म सिन्ध-हैदराबाद में उस समय हुआ जब नारी सामाजिक कुरीतियों, पाखंडों, कर्मकाण्डों की बेड़ी में बहुत बुरी तरह जकड़ी हुई थी और विकारों का ज़ोर था। मात्र 14 वर्ष की अल्पायु, जिसमें सामान्यतः कन्यायें खेलती-कूदती हैं, आप तपस्या की ओर उन्मुख हुईं।

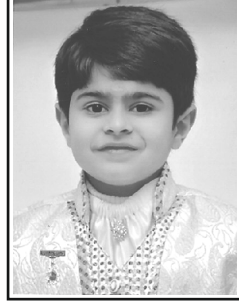
कमल पुष्प समान खिला हुआ चेहरा

आज जबकि चारों ओर जाति भेद, रंगभेद, वर्णभेद की आग में संसार जल रहा है, आपका इन सभी बातों से पृथक सदैव हर्षित रहने वाला चेहरा अनेकों उदास, अशान्त, परेशान, थकी मनुष्यात्माओं के जीवन को खुशियों से भरने की सेवा में दिन-रात तत्पर रहता था। प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में जागरण, योग-साधना, विभिन्न ज्ञान-योग कक्षाएँ लेना, अनेक स्थलों का भ्रमण, सैकड़ों पत्रों का जवाब प्रतिदिन देना एवं रात्रि में योग और ज्ञान मुरली के पश्चात् ही विश्राम। ऐसी व्यस्त दिनचर्या के पश्चात् प्रातः वही खिला हुआ कमलपुष्प समान चेहरा बड़ी आयु में भी युवाओं को कुछ कर गुज़रने की प्रतिदिन प्रेरणा प्रदान करता रहता था। भले ही आप साकार में हमारे मध्य में आज नहीं रही परंतु आपकी रूहानियत हम ब्रह्मावत्सों को ब्रह्मा बाबा समान निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी बनने की प्रेरणा देती रहेगी। ❖

तहेदिल से शुकिया खुदा दोस्त

ब्रह्माकुमार सत्यम, रादौर (हरियाणा)

जब मैं 3 वर्ष का था तब मुझे शिव बाबा जैसा दोस्त मिल गया। ऐसा दोस्त जो हर वक्त, हर पल, हर घड़ी मेरे साथ रहता है। आज मुझे लौकिक व आलौकिक परिवार में, स्कूल में, जहाँ भी मैं जाता हूँ सर्व आत्माएँ बेहद प्यार करती हैं। वे मेरी स्मरण शक्ति, आत्मविश्वास तथा शान्त स्वभाव से बेहद प्रभावित होती हैं। पर मुझे ऐसा बनाने वाला तो स्वयं परमपिता परमात्मा शिव



है। मैं उनसे बहुत-बहुत प्यार करता हूँ इसलिए ही सब मनुष्य भी मुझे बहुत प्यार करते हैं। सुबह उठते ही सबसे पहले प्यार से बाबा को गुडमॉर्निंग करता हूँ। बाबा को कहता हूँ, बाबा, जो हूँ, जैसा हूँ, आपका हूँ... प्यारे बाबा, मेरा (सेवा में) प्रयोग करो। मैं सबको सुख व खुशी देने के ही निमित्त बनूँ... आप हर वक्त मेरे साथ रहना। फिर मुझे महसूस होता है कि बाबा ने अपना हाथ प्यार से मेरे सिर पर रखा और कहा, मैं तो सदा तेरे साथ हूँ... विजयी भव।

मैं नहाते हुए, गाड़ी में स्कूल जाते हुए, पढ़ते हुए, स्टेज पर बोलते हुए, चलते हुए, खाते हुए बाबा को साथ रखता हूँ और कहता हूँ, आओ बाबा.. ये करें। मैं कभी मुरली मिस नहीं करता। रूहानी और जिस्मानी दोनों स्कूलों की पढ़ाई साथ-साथ करता हूँ। आज मेरे पास दस ट्रॉफीज, 5 मैडल्स और बहुत सारे सर्टिफिकेट्स हैं। जिलाधीश द्वारा भी सम्मान दिया गया है। हर क्षेत्र में प्रथम आता हूँ। सबको लगता है, मैं विशेष मेहनत तथा पुरुषार्थ करता हूँ पर सच में, मुझे तो कभी मेहनत लगी ही नहीं। मैं तो बिल्कुल हल्का रहता हूँ। ऐसा लगता है जैसे बाबा ने सब कुछ कर दिया, मैंने तो कुछ किया ही नहीं। बाबा साथी होने से कोई भी कार्य में मेहनत नहीं लगती बल्कि खुशी होती है। सारी सफलता, सारे प्यार व मान का हकदार तो मेरा बाबा है, जो सब कुछ करके नाम मेरा कर देता है। ऐसे दोस्त को पाकर दिल बार-बार कहता है,

तुझे पाकर मैंने जहाँ पा लिया है, जमीं तो जमीं, आसमां पा लिया है।

एक बार दिल से आप भी उसे अपना साथी बनाकर तो देखो, आपका दिल भी यही गायेगा। ❖

जिस्मानी सेना के निमित्त रूहानी सैनिक

भारतीय नौसेना के एक अधिकारी के सुपुत्र कर्नल सती भाई नैनीताल जिले के रानीखेत के रहने वाले हैं। लखनऊ में हॉस्टल में रहकर पढ़ाई करते-करते आपको जुलाई, 1983 में ईश्वरीय ज्ञान, हनुमान जी की भक्ति के फल के रूप में मिला। एम.एस.सी. के बाद आप सेना में अधिकारी के रूप में चुने गए और पदोन्नत होते-होते अब कर्नल के रूप में सेवारत हैं। सेना में रहते हुए एक तरफ कर्तव्य पालन तथा दूसरी तरफ ईश्वरीय नियमों, मर्यादाओं के प्रति दृढ़ता—यह अनोखा सन्तुलन आपके जीवन से झलकता है। हिंसा और बदले की भावना से बढ़कर शान्ति की शक्ति कैसे दिलों का मिलन कर देती है, कर्मों को यादगार कर्म बना देती है, सीमा पर हुए इस प्रकार के उनके अलौकिक अनुभवों की कहानी को हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं – सम्पादक

ईश्वरीय ज्ञान में प्रवेश

ब्रह्माकुमारीज की ओर से आयोजित एक आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी में जब निराकार शिव का चित्र देखा, तो जिज्ञासा उठी कि यह कौन हैं। मैंने एक भाई से इस चित्र के बारे में पूछा, उन्होंने कहा कि यह परमात्मा का सत्य स्वरूप है। मैंने पूछा, आपने कैसे जाना कि यही सत्य स्वरूप है? उन्होंने कहा, ब्रह्माकुमारी संस्था में इसकी विस्तृत शिक्षा दी जाती है, अगर चाहें तो आपको भी वहाँ ले चलेंगे। मैं बी.एस.सी. द्वितीय साल का विद्यार्थी था, हॉस्टल में रहता था, मेरे पास काफी समय था। मैंने कहा, कल सुबह चलते हैं। इस प्रकार माह जुलाई, सन् 1983 में पहली बार लखनऊ में खुरशीद बाग स्थित ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर जाना हुआ। वहाँ पर सती दादी इन्चार्ज थी। बाबा के समय की बहुत ही विशेष रत्न थी। जब म्यूजियम समझाया गया तो मुझे महसूसता आई कि यह बहुत ही अच्छा ज्ञान है, बिना किसी शंका

के इसे समझना भी है और फॉलो भी करना है।

मैं सेवाकेन्द्र पर नियमित जाने लगा। कोई भी सेवा हो, किसी भी प्रकार की उसमें भाग लेता था, चाहे आटा लाना हो, गाँव में जाकर प्रदर्शनी समझानी हो, झाड़ू-पोछे की सेवा हो, मुझे सबमें रुचि थी। सेवा से मिली दुआओं का परिणाम यह रहा कि मैंने बी.एस.सी. प्रथम श्रेणी में और एम.एस.सी. भी बहुत अच्छे नंबरों में पास की। इसके बाद बाबा ने ऐसा ड्रामा रचा कि मैं सेना में अधिकारी के रूप में चुना गया। मैं आज दिल से कहना चाहता हूँ कि मुझे बहुत गर्व है कि मैं भारतीय सेना का एक अधिकारी हूँ। जब तक मैं सेना में चुना नहीं गया था, मधुबन भी नहीं जा सका क्योंकि मेरे पास पैसे ही नहीं होते थे। पैसे पढ़ाई में खर्च हो जाते थे, और खर्चे भी थे। बाबा के प्रति मेरी आस्था इतनी गहरी थी कि मुझे कभी लगता ही नहीं था कि मैं मधुबन नहीं गया, बाबा से नहीं मिला।

इतनी गहरी बाबा के साथ टचिंग थी कि जब अव्यक्त वाणी पढ़ता था तो लगता था, मैं बाबा के साथ बातें कर रहा हूँ। ऑफिसर बनने के बाद पहली बार मार्च, 1989 में मधुबन आया, बहुत अच्छा लगा।

सेना में बने रहने की श्रेष्ठ मत

हमारी सेना बहुत अच्छी है, इसमें बहुत अनुशासन है। कार्यशैली बहुत उच्च कोटी की है। लोगों को जोश है देश के प्रति, लेकिन वहाँ पर सब कुछ देह से जुड़ा हुआ है इसलिए शान्ति को नहीं, हिंसा को स्थान है। लेकिन अध्यात्म तो शान्ति की शक्ति से विश्व को नया बनाने की बात कहता है। शुरू-शुरू में विचारों का यह अंतर मुझे दिख रहा था।

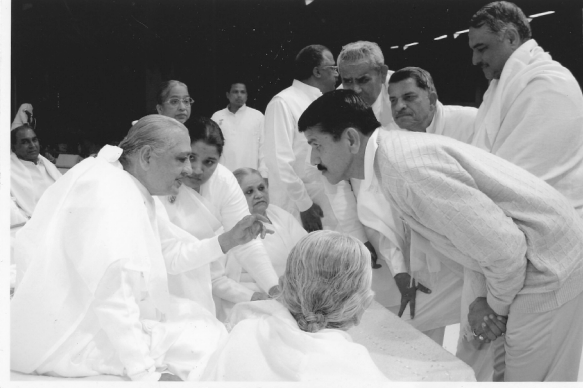
सेना में सेवा का मेरा करार पाँच साल का था, उस समय मैं कैप्टन था। पाँच साल पूरे होने पर मैंने सोचा, फौज छोड़ देते हैं, हम भी कहीं ना कहीं फिट हो जाएँगे इतने बड़े यज्ञ में। मैंने अर्जी डाल दी कि मुझे सेना छोड़नी है। हमारे कमांड अधिकारी, जो

फाइनल साइन करते हैं उन्होंने मेरा फौज छोड़ने का फार्म देखा तो अपने ऑफिस में बुलाया और पूछा, यह आपने क्या फार्म भर दिया है? मैंने कहा, हाँ सर, मैं फौज छोड़ना चाहूँगा। उन्होंने पूछा, क्यों चाहते हैं आप ऐसा? मैंने कहा, सर, मुझे फौज का विरोध नहीं है लेकिन मेरी विचारधारा शान्ति की है। वे बहुत अनुभवी थे, मुझे तीन साल से देख रहे थे। उन्होंने मुझे समझाया कि आप भारत की सेना के लिए फौजी हो, शाकाहारी हो (शराब, सिगरेट, माँस नहीं लेते हो)। अधिकतर देखता हूँ कि आप मुसकराते भी रहते हो। आपके अंदर और भी बहुत कलायें हैं। मुझे लगता है कि सेना को आप जैसे अधिकारियों की ज़रूरत है। मैं कमाण्ड अधिकारी आपको ऑर्डर के साथ कहना चाहता हूँ कि आप फौज नहीं छोड़ेंगे, फौज में रहेंगे। उनकी बात से संतुष्ट नहीं हुई, मुझे लगा, मेरे ऊपर सेना की सेवा ज़बरदस्ती थोपी जा रही है। उन दिनों मैं हैदराबाद में था, वहाँ की निमित्त कुलदीप बहन को बताया कि आज मेरे कमाण्ड अधिकारी ने ऐसे कहा है पर उनके कथन से मैं सन्तुष्ट नहीं हूँ, मैं ईश्वरीय सेवा में समर्पित होना चाहता हूँ। बहन जी ने मुझे जवाब में कहा, भैया, आप फौज मत छोड़ना, बाबा आप से सेवा लेगा। मैं थोड़ा सोचने लगा कि ये भी ऐसे कह रही हैं,

इसके पीछे बाबा का कोई राज होगा। छोड़ो, अब मन बना लेते हैं फौज में रहने का। मैंने दूसरी अर्जी भरी और फौज में रहने का संकल्प ले लिया।

बार-बार मुरली का अध्ययन

समय बीतता गया। मैंने फौज में किसी को ज्ञान नहीं सुनाया पर अपना जीवन धारणामूर्त बनाकर रखा। लोगों के बीच में रहते हैं तो वे हमें देखते तो हैं। जब सेवाकाल 15 वर्ष पार कर गया तब लोगों ने कहना शुरू किया, हम आपको इतने समय से देख रहे हैं, आपकी जीवन पद्धति वैसी ही है, आप खुश रहते हो, बड़े हलके रहते हो और हर काम के लिए तैयार रहते हो। मैं कई बार मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) का अध्ययन करता था। मेरे वरिष्ठ अधिकारी पूछते थे, यह क्या पढ़ रहे हो? मैं कहता था, सर, यह परमात्मा की वाणी है, इसे मुरली कहते हैं। वे कहते थे, आज हमें दे दो, हम पढ़ेंगे। मेरे से ले जाते थे पर उनको कुछ समझ नहीं आता था। उनको लगता था कि शायद इसके अंदर कुछ ज्ञान की ऐसी बातें हैं, तभी रोज़ इसको पढ़ता है।



अव्यक्त बापदादा से श्रीमत लेते हुए कर्नल सती भाई

कश्मीर में आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में योग का प्रयोग

सन् 1995 में मैं मेजर बन गया और कश्मीर-श्रीनगर में पोस्टिंग हो गई, उस समय आतंकवाद बहुत बढ़ा हुआ था। उस दौरान आतंकवाद के खिलाफ ऐसे-ऐसे कार्य करने पड़े, लगता था कि सब बाबा करा रहा है। बाबा का हमारे लिए बहुत अच्छा सन्देश है कि कहीं भी जाओ, बाबा को बता के जाओ, बहनों को बता के जाओ। मैं जब हैदराबाद से कश्मीर जा रहा था, बहनों ने बाबा को भोग लगाया था, मेरे सम्मान में पार्टी दी थी, बहुत-बहुत दुआयें दी थीं, आशीर्वाद दिये थे। वे बहुत फलीभूत हुए। उनसे एक प्रकार की बाबा की छत्रछाया महसूस होने लगी। मुरली पढ़ना, अमृतवेला करना यही हमारी ताकत है, इससे बाबा की बहुत मदद मिली। मुरली हमारी बुद्धि को सीधे रास्ते पर चलाती है। इससे बाबा की सुरक्षा मिलती है। (क्रमशः)

मधुमेह (डायबिटीज़) का सम्पूर्ण निदान

● ब्रह्माकुमार रामलखन, शान्तिवन

सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए वैज्ञानिक हजारों तरीके अपना रहे हैं। ग्लोबल हास्पिटल एवं अनुसंधान केन्द्र, माउन्ट आबू में अब वैज्ञानिकता के साथ आध्यात्मिकता को भी सहयोगी बनाने से मधुमेह जैसे जानलेवा रोगों के निदान के चमत्कारिक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। राजयोग के अनुभवी और मधुमेह विशेषज्ञ डा.श्रीमन्त जी मेडिसिन के साथ मेडिटेशन के प्रयोग से हजारों मरीजों को स्वस्थ कर चुके हैं। सन 2012 में भारत के विभिन्न प्रान्तों में जाकर 40 डायबिटीज़ शिविरों के द्वारा लाखों लोगों में पूर्ण जागृति लाने में सफल हुए हैं। आध्यात्मिक जीवन शैली के ज्ञान से सद्विचार, प्राकृतिक आहार-विहार-व्यवहार की सम्पदा सहज ही मिल जाती है। वैद्यनाथ शिव परमात्मा पर एकाग्र होने से परखने, निर्णय करने जैसी शक्तियों का विकास होता जाता है, फलस्वरूप, हम ईर्ष्या-द्वेष-आलस्य-घृणा जैसे विकारों से बचे रहते हैं। ऐसे विकारों का तनाव ही मधुमेह का निमित्त आधार बनता है।

महामारी की तरह फैलती हुई मधुमेह की बीमारी 40 साल पहले मात्र 1 प्रतिशत लोगों में ही थी। आज ग्रामीण क्षेत्रों में 15 प्रतिशत के करीब

तो शहरों में 30 प्रतिशत तक लोग इसके आगोश में तड़प रहे हैं। विश्व के 37 करोड़ लोग इससे परेशान हैं। हर साल एक करोड़ से अधिक मधुमेह रोगियों का इजाफा होता जा रहा है। 6.5 करोड़ रोगियों के साथ भारत, विश्व में मधुमेह की राजधानी बनने जा रहा है। सन् 2011 में 10 लाख लोग इस महाकाल के गाल में समा गये। बच्चों से लेकर बूढ़ों में जिस गति से यह बीमारी बढ़ रही है, भविष्य में इसका दुष्परिणाम अति भयावह हो सकता है। यह आनुवंशिक के साथ जीवन शैली जनित बीमारी है। पिछले दो-तीन दशकों में भारत के साथ सारे संसार की जीवन शैली में आमूल बदलाव आ गया है। विज्ञान ने सुखों के साधन देकर मनुष्य को कर्मठ की बजाय आलसी-विलासी बना दिया है। शाकाहारी, प्राकृतिक भोजन की बजाय रिफाइनड-रेशाविहीन, मांसाहारी जंक फूड को सेवन करने वालों की संख्या दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़ रही है। दिन में कई बार खाते रहने वाले स्थूल काया वाले ऐसी बीमारियों को बुलावा देते रहते हैं। फलतः हर वर्ग व आयु के लोग तनाव, चिन्ता, जल्दबाजी के कारण रोग-शोक से घिरते जा रहे हैं। अनुसंधानों के अनुसार 60 प्रतिशत से भी अधिक

बीमारियाँ जैसे कि मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, कैंसर आदि आधुनिकीकरण के तनाव से बढ़ती ही जा रही हैं।

ग्लोबल के प्रबन्धक और चिकित्सक “सर्वांगीण उपचार” हेतु प्रेरित करते ही रहते हैं। दवा के साथ-साथ यहाँ मधुमेह जैसी बीमारियों के लिए आध्यात्मिक जीवन शैली अपनाने हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। यह प्रोग्राम डॉ.श्रीमन्त और उनकी टीम द्वारा बखूबी चलाया जा रहा है। पाँच दिवसीय यह प्रोग्राम रोगी के साथ एक सहयोगी को वार्ड में भर्ती करा कर किया जाता है। खून-पेशाब, आँख-दाँत, हृदय-पैर आदि की सम्पूर्ण चेकिंग के बाद सुबह-शाम यहाँ म्यूजिकल व्यायाम सिखाया जाता है। डॉ.श्रीमन्त जी मरीजों को व्यक्तिगत हिलिंग टच देते हैं। इससे रोगी, जीवन जीने की आध्यात्मिक कला सीख कर सम्पूर्ण तनाव मुक्त हो जाते हैं। रक्त शर्करा व रक्त चाप की बीमारियाँ सहज ही दूर भाग जाती हैं। हितकारी भावनायें व आहार, इन्सुलिन हार्मोन को ठीक कर देते हैं।

मधुमेह के रोगी को उतना भोजन अवश्य लेना चाहिए जितनी कैलोरी उसे आवश्यक हो। उन्हें सूगर फ्री मिठाइयाँ, पपीता, लौकी, करेला,

नीबू, अमरूद, दूध-पनीर-नारियल पानी जैसी चीजें दे सकते हैं। उन्हें अपना वजन भी तुरन्त ठीक कर लेना चाहिए।

विश्व स्वास्थ्य संगठन और अन्तर्राष्ट्रीय मधुमेह फेडरेशन का कहना है कि जब तक मधुमेह जैसी जानलेवा बीमारियों के बारे में सभी को पूर्ण अवगत नहीं कराया जायेगा तब तक इसके दुष्प्रभाव से बचा नहीं जा सकेगा। इसलिए इन संस्थानों का स्लोगन है – Educate, Educate and Educate. ग्लोबल हॉस्पिटल के मैनेजिंग ट्रस्टी वरिष्ठ भ्राता निर्वैर जी और मधुमेह विशेषज्ञ डॉ. श्रीमन्त जी, डॉ. गिरीश पटेल जी ने जन जागृति हेतु जो पान का बीड़ा उठाया है उससे आशा के साथ पूर्ण विश्वास हो रहा है कि देश के अनेक समाज सेवी संगठन, प्रान्तीय सरकारें और मीडिया के सभी माध्यम मधुमेह जैसी बीमारियों को सम्पूर्ण रीति से समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।

मधुमेह के रोगी में तनाव, दुःख या देह अभिमान आने से उसकी प्रकृति पर बुरा प्रभाव पड़ने लगता है। जब वह सकारात्मक चिन्तन करता है तो उसके शुभ संकल्पों का सारे ही शरीर पर अच्छा प्रभाव पड़ने लगता है। फलस्वरूप, संतुलित जीवन हो जाने से वह सच्चे सुख-शान्ति का अनुभव करने लगता है। इस प्रक्रिया के लिए सहज आसन पर खुले नेत्रों से बैठकर धीरे-धीरे श्वास लें और छोड़ें। मन ही मन कम से कम दस बार ॐ शान्ति धीरे पर लम्बे स्वर में बोलें। फिर भृकुटी के बीच अपने को चैतन्य शक्ति आत्मा अनुभव करते हुए इस प्रकार चिन्तन करें – मैं प्रकाशमय सितारा, सत्-चित्-आनन्द स्वरूप आत्मा इस शरीर की मालिक हूँ। परम शक्ति, ज्ञानसागर, परमात्मा पिता निराकार होते हुए भी सृष्टि के सृजनहार हैं। मैं उनकी प्रिय संतान हूँ इसलिए मुझ आत्मा में उनकी सम्पूर्ण शक्तियाँ, आनन्द, सुख, शान्ति की किरणें प्रवेश करती जा रही हैं। मैं भी उन्हीं की तरह सुख-शान्ति-आनन्द से

भरपूर हो शक्तिशाली प्रभामण्डल से जग को आह्लादित करती जा रही हूँ। सुखदायिनी-शान्तिदायिनी किरणों मेरे शरीर के चारों तरफ फैलती जा रही हैं। वे एकत्रित हो मेरे अग्न्याशय (पैनक्रिआज) पर भी पड़ रही हैं। इन्सुलिन मेरे अग्न्याशय से उत्पन्न होने लगा है। शरीर के एक-एक कोश में इन्सुलिन पहुँचकर, जहाँ खून में शूगर ज्यादा है उसे भी ठीक कर रहा है। धीरे-धीरे शूगर हर जीवकोश में जा रही है जिससे शरीर के लिए ज़रूरी ऊर्जा भी तैयार हो रही है। फलतः मेरे शरीर की शुगर सहज ही सामान्य होती जा रही है। मैं स्वयं को बहुत ही शक्तिशाली प्रफुल्लित आत्मा महसूस कर रहा हूँ। नियमित रूप से दिन में दो-तीन बार इस ध्यान पद्धति का लगन से अभ्यास करते रहें। ❖

दादी प्रकाशमणि

ब्रह्माकुमार विवेक, पाण्डव भवन (माउण्ट आबू)

हाँ वो प्यारी दादी थी,
परियों की शहजादी थी।
सूर्य-सी चमकती थी, मधुवन मण्डल में,
प्यार का सागर लिए, श्वेत आँचल में।
हर्षित चेहरा, अपनेपन की कहानी लिए,
मीठी मुरली की बहार, सुहानी लिए।
मधुर मुस्कान लिए, वो छवि मन-भावन,
उनकी वाणी से बरसता था, सदा सुख सावन।
आभा अलौकिक, लिए जीवन-मुक्ति,
दैवी परिवार को संग, ले चलने की युक्ति।
नैनों से बरसती थी अमृतधारा,
आने वाली दुनिया का रूप था वो प्यारा।
कभी शक्ति स्वरूपा, कभी बच्चों-सी भोली,
कभी पिकनिक, कभी आम, कभी मीठी टोली।
भगवान ने जैसे खुद अद्भुत करिश्मा बनाया हो,
अपने निज स्वरूप को, दादी जी में दोहराया हो।
हाँ वो मीठी दादी थी,
चैतन्य फूलों की सुन्दर वादी थी।।

दादी जी – मेरी दृष्टि में

● ब्रह्माकुमार किशनदत्त अनुदर्शी, शान्तिवन

दादी प्रकाशमणि जी ने सन् 1936 में 14 वर्ष की बाल्यावस्था में ही अध्यात्म की साधना में स्वयं को समर्पित कर दिया। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक और निराकार परमात्मा शिव के मानवीय माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सन् 1969 में अव्यक्त होने के पश्चात् संस्थान के संचालन की बागडोर आपके हाथों में आई और आपने स्वयं को निमित्त समझते हुए संचालन व्यवस्था को बखूबी संभाला। अलौकिक व्यक्तित्व की धनी दादी जी 25 अगस्त, 2007 को भौतिक देह त्याग अव्यक्त वतनवासी बन गईं। लगभग 71 वर्ष के साधना काल और 38 वर्ष के नेतृत्व काल में उनके चरित्र चिरस्मरणीय बन गये। उनकी नेतृत्व क्षमता की निपुणता की विशेष झलकियाँ अनेक लोगों ने अनुभव की हैं।

सेवा करने वालों का सम्मान

नेतृत्व के लिए सबसे पहली आवश्यकता मनोबल की होती है। आध्यात्मिक साधना के सतत् अभ्यास द्वारा मनोबल बढ़ाया जा सकता है। दादी प्रकाशमणि ने राजयोग की साधना द्वारा मनोबल का विकास किया और मुख्य प्रशासिका के पद का निर्वहन बड़ी सफलता से

किया। उनके जीवन के एक प्रेरणादायी प्रसंग का उल्लेख करना समीचीन होगा। एक बार आध्यात्मिक मेले की ट्रांसपोर्ट की सेवा करके एक वरिष्ठ भाई (साकार बाबा के समय का ज्ञान प्राप्त किया हुआ) देर रात सेवाकेन्द्र पर लौटा। दिनभर सेवा में व्यस्त रहने के कारण उसे भूख लगी थी, उसने सेवाकेन्द्र की बहनों से भोजन के लिए अनुरोध किया। बहनों ने कहा, यह कोई भोजन का समय है। उस सेवाकेन्द्र पर कुछ समय के लिए आई हुई मुख्य प्रशासिका दादीजी को इस बात का पता चला तो उन्होंने स्वयं खाना बनाना शुरू कर दिया। अन्य बहनों को जब पता लगा तो वे तुरंत दौड़कर आईं और खाना बनाने में सहयोग देने लगीं। इस वृत्तांत का उल्लेख करने का भावार्थ यह है कि एक अच्छा उदारचित्त संचालक, कार्य करने वालों की कद्र करता है और उनकी हर आवश्यकता की पूर्ति करने में अपने आराम की भी परवाह नहीं करता।

आंतरिक कलाओं की परख

कुशल नेतृत्व क्षमता की धनी दादीजी ने अपनी परखशक्ति से सभी ब्रह्मावत्सों की अंतर्निहित कलाओं का उपयोग कर उन्हें सेवा में सहयोगी



बनाया। दादी जी ने किसी की कमी या कमजोरी को अपने चित्त पर नहीं रखा। अपनी मधुर शिक्षाओं से गलत को महसूस कराकर, उनकी मान्यताओं को यथार्थ बनाकर उन्हें सेवा में साथी-सहयोगी बनाया।

सर्व को सर्व प्रकार से सहयोग देकर उन्हें मूल्यवान बना देना, सबको ऊँचा उठा देना, सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना, सर्व की कमजोरियों को अपनी कमजोरी समझना, उन्हें दूर करने की उदात्त भावना रखना – दादी जी ने ये कार्य प्रैक्टिकल रूप में करके दिखाये। उन्होंने सबको अनेक प्रकार की मदद देते हुए मूल्यवान (योग्य) बनाया। उनके नेतृत्वकाल में हजारों (लगभग 20 हजार) आत्माओं ने ईश्वरीय सेवा में अपना जीवन समर्पित किया जिनमें दादी ने अपनी उदार भावनाओं से रूहानी मातृत्व एवं स्नेह का संचार किया। उनके सान्निध्य में पुष्पित पल्लवित हुई लाखों आत्माएँ आज भी उनकी अलौकिक पालना की

अलौकिक गाथा कहते हुए प्रतीत हो रहे हैं। इसलिए दादी जी विश्व की दादी के रूप में प्रख्यात हुईं।

स्वसेवा और विश्व-सेवा का संतुलन

मानव जीवन के महान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्व-साधना और सर्व की सेवा, इन दोनों पक्षों में सहज संतुलन होना जरूरी है। दादी जी ने जितनी लगन से राजयोग की साधना के द्वारा ईश्वरीय शक्तियों की अनुभूति की, उतनी ही आत्मीयता से वे जनकल्याण की सेवा में भी लगी रही। उन्होंने साधना को प्रथम स्थान दिया और सेवा को दूसरा। साधना पर जोर देते हुए वे अक्सर कहा करती थी कि 'हमें यह जीवन मिला ही है तपस्या करने के लिए। हम तपस्या करते हुए सेवाओं को संपन्न करते चलें।' उनके उद्बोधनों से यह स्पष्ट पता चलता है कि उनके चिंतन में अध्यात्म की साधना सर्वप्रथम थी।

उनके सन्निध्य में मिलते थे समाधान

दादी जी का जीवन संपूर्ण पवित्रता और सम्पूर्ण समर्पण का अनूठा उदाहरण रहा। परमात्मा के प्रति और परमात्मा के साकार माध्यम (प्रजापिता ब्रह्मा बाबा) के प्रति ऐसा समर्पित भाव अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता है। उनके अंतःकरण की पवित्रता के पवित्र प्रकंपन हमने स्वयं अनुभव किये। उनकी पवित्रता और शीतलता की आभा (छाया) के अंदर आते ही अनेक लोगों को समाधान मिल जाते थे। सब उनसे मिलकर स्वयं को हलका अनुभव करते थे। धन्य हैं वे आत्मायें जिन्हें उनका सान्निध्य मिला।

दादी जी का जीवन चरित्र हम सबके लिए प्रेरणादायक है। सदा अव्यक्त स्थिति के अनुभव में रहने वाली ऐसी आत्मा जब फरिश्ता स्वरूप धारण करती है तो सूक्ष्म रूप से मार्गदर्शन करने की सेवा करती है। दिव्य आत्माओं का अंतिम कार्य भी दिव्य ही होता है। दादी जी की अव्यक्त प्रेरणायें आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रही हैं। ऐसी दिव्य प्रभावान, दिव्य आलोक बिखेरने वाली दिव्य आत्मा को हम हृदय से श्रद्धा-सुमन समर्पित करते हैं। ❖

एक स्वतः बाबा के नाम

ब्रह्माकुमारी देवकन्या हराळे, अकोला

प्यारे बाबा, मैं आपके बताए रास्ते पर चल रही हूँ, बाबा, मुझे आपसे बहुत प्यार है। जहाँ-जहाँ मैं देखती हूँ, आप ही नजर आते हैं। बाबा आपने मेरी मदद की, उसके लिए धन्यवाद। मेरे प्यारे बाबा, मुझे लगन लगी रहती है कि आपकी मीठी बातें सुनने को कब मिलेंगी, मैं रविवार को ही क्लास में आती हूँ। बाबा, पहले-पहले तो मुझे रात को बाहर निकलने में काफी डर लगता था। मगर अब ऐसा लगता है कि बाबा मेरे साथ हैं, तो डरने की क्या बात है। मैं बिना डरे बाहर जा सकती हूँ। मेरे प्यारे बाबा, मैं आपको जब भी याद करती हूँ, मुझे शांति मिलती है। बाबा मुझे आपसे बहुत प्रेम है।

मेरे प्यारे बाबा, मेरे अति प्रिय बाबा, मेरा आपको अति-अति प्यार। बाबा मैं बहुत खुश हूँ कि आप मुझे मिले। बाबा जब मुझे नींद नहीं आती, तब आप मुझे अपनी गोद में लेकर सुलाते हो और अपने कोमल-कोमल हाथों से सहलाते हो। उसके लिए बहुत धन्यवाद, मुझे वह बहुत अच्छा लगता है। बाबा, आपका एक-एक बोल मेरे लिए हीरा है। बाबा आपकी वाणी इतनी मीठी है, मन कहता है, सुनते ही जाओ।

बाबा मुझे तो आपसे बहुत-सी मीठी-मीठी बातें करनी हैं मगर क्या करूँ, कागज पर जगह ही कहाँ है। मगर दिल में तो बहुत सारी जगह है, दिल की बातें तो चलती ही रहेंगी।

मैंने तो एक का ही पकड़ा है हाथ।

और एक को ही करती हूँ याद।

मरते दम तक उसके ही रहूँगी साथ।

वे हैं मेरे प्यारे शिव बाबा, शिव बाबा।।

आखिर कब तक सहन करें ?

● ब्रह्माकुमार प्रवीण, कोंढाली (महाराष्ट्र)

कि सी व्यक्ति, वस्तु या स्वयं के रोग-शोक से जब हम पीड़ित हो जाते हैं तब मुख से अनायास ही ये बोल निकल पड़ते हैं कि आखिर भी इस पीड़ा को कब तक झेलना होगा, सहन करने की भी कोई सीमा तो होनी चाहिए। लेकिन सत्य यह है कि गुणों की कभी कोई सीमा नहीं आंकी जा सकती।

बनिए अमीर सहनशक्ति में

मान लीजिए, हमारे पास थोड़ा धन है, तो हम खयाल रखेंगे कि इस थोड़ी-सी पूंजी में सारी जरूरी आवश्यकताएँ पूरी हो जाएँ अर्थात् धन को बचा-बचा कर प्रयोग करेंगे। इसके विपरीत, कोई व्यक्ति करोड़पति है, उसके पास बहुत धन है, वह पैसा खर्च करते वक्त इतना सोचेगा नहीं जैसे कि एक गरीब व्यक्ति सोचता है। कहते हैं, पहले के राजा लोग जब जेवरात खरीदने जाते थे तो सिर्फ मनपसंद वस्तु पर हाथ रखते थे, दाम नहीं पूछते थे। उनको मालूम था कि हमारे पास अनगिनत धन है अर्थात् जब अकिचार धन है तो वस्तु की कीमत का हम विचार नहीं करते। यही बात हमारी सहनशक्ति पर भी लागू होती है। जब आत्मा में सहनशक्ति का, प्रेम का भण्डार कम होता है तब ही संकल्प आता है कि आखिर कब तक सहन करें? एक

माता को कभी खयाल नहीं आता कि कब तक बच्चों का सहन करें क्योंकि उसके पास बच्चों के लिए प्रेम का भरपूर भण्डार होता है। ऐसा भी नहीं है कि हर माता के पास सहनशक्ति भरपूर होती है, जिस माता के पास प्रेम का खजाना भरपूर नहीं है वह बच्चों पर हाथ भी उठा लेती है। भावार्थ यह है कि यह कहने के बजाए कि कब तक सहन करें, हमें अपनी कमी को भरना चाहिए। मैं आत्मा प्रेम के सागर की संतान हूँ, उसकी संतान होते हुए कहुँ, मुझसे सहन नहीं होता, क्या यह परमात्मा का अपमान नहीं है?

प्रेम-सागर से घनिष्ट सम्बन्ध

बनाता है सहनशील

नदी, हवा, धरती कभी नहीं कहती कि हम कब तक इस तमोप्रधान मनुष्य की सेवा करें? सूर्य कभी नहीं कहता कि मुझे कब तक रोशनी देनी होगी? फूल कभी नहीं

कहते कि कब तक सुगंध देनी होगी? आखिर कब तक सहन करना होगा, मरना होगा, पीड़ित होना होगा, ऐसे शब्द सहनशक्ति की कमी को दर्शाते हैं। कोई बोलचाल में कहते हैं, हम तो बहुत सहन करते हैं, मरते हैं, इतना तो शायद कोई कर नहीं सकता। वे यह भूल जाते हैं कि प्यारे ब्रह्मा बाबा ने शिव बाबा का बनने के बाद जितना सहन किया उसका वर्णन स्वयं भगवान भी करते हैं। क्या हम ब्रह्मा बाबा जितना सहन कर सकते हैं? यह सवाल अपने से पूछें। हमारा अभिमान बोल पड़ता है कि हम बहुत सहनशील हैं। सहनशील आत्मा सहन तो करती है लेकिन कभी उसका वर्णन नहीं करती, ना किसी को उसका पता लग पाता है। वह हर पीड़ा को सूली से कांटा बना लेती है। फिर भी अपने प्रेम की शक्ति से सदा हर्षितमुख नज़र आती है। तो जितना हमारा सम्बन्ध प्रेम के सागर से है, उतना हम मास्टर प्रेम के सागर बनेंगे और कभी नहीं कहेंगे कि आखिर कब तक सहन करें? ❖

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी

नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है।

अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान

मोबाइल: 09413240131 फोन: (02974) 238347/48/49

वेबसाइट: www.ghrc-abu.com फैक्स: (02974) 238570

ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org